अेक गांव री गोमती

अेक गांव री गोमती

(राजस्थानी रा दो नुवा नाटक)

) निर्मोही व्यास
प्रकाशक
पुस्तक मन्दिर 4 मूली क्वार्टर्स
नगर परिषद के पास बीकानेर–334001
पैलो सस्करण 2002
मूल्य 80 रु मात्र
कम्पोजिग
विनायक कम्प्यूटर एण्ड प्रिण्टर्स
लालाणी व्यासो का चोक बीकानेर फोन 202326 (नि)
मुद्रक
कल्याणी प्रिण्टर्स माल गोदाम रोड बीकानेर

EK GAON RI GOMATI by Nirmohi Vyas @ Rs 80/

मायड भाषा रा घणा मानीजता महामना अर राजस्थानी रा पैलडा उपन्यासकार आदरजोग श्री श्रीलाल नथमलजी जोशी ने सादर भेट जिका म्हने राजस्थानी मे लिखणे री प्रेरणा दीन्ही।

- निर्मोही व्यास

म्हारी बात

लारलै बरसा मे राजस्थानी नाटका नै लोकगीत–सगीत रै सागै मचन करणै री अेक होड सी लाग्योडी है। अनेकानेक नाटय समारोहा रै मौकै अेडा ही हीज नाटक खेलीज रैया है।

म्हारी व्यक्तिगत मानता आ है कै बगला मराठी गुजराती अर हिन्दी नाटका री बरोबरी मे जे राजस्थानी नाटका नै लावण री जुगाड करणी है तो इण मिथक नै तोडणो पडसी कै गीत–सगीत रै बिना राजस्थानी नाटका री कोई ओळखाण नीं है। हर दरसाव सू पैला गीता री माळा गूथणै रै पाछै अेक हीज तर्क है कै दरसका नै राजस्थानी सस्कृति री झलक दिखाई जा सकै। म्हारी समझ मे राजस्थानी सस्कृति कोरी गीत–सगीत में ही झलकै आ बात ओपती नीं है। दरसाव रै सागै पैरावो बोलीचाली अर सवादा में भी तो बा झलक देखी जा सकै है।

राजस्थानी नाटका नै जे आगै बधावणो है तो स्सै सू पैला यथार्थवादी नाटका कानी ध्यान देवणो पडसी।

कथानक रै तगादै गीत–सगीत भेळीजै तो अपरोगा नीं लखावै। पण जद कथानक रै मिजाज रै बिलकुल विपरीत फकत सस्कृति रा प्रस्तोता हावण रो कूडो बहम पाळता जिका नाटयकर्मी ऊपर सू गीत–सगीत नै अैडै नाटका मे थोपणै री चेस्टा करै बै कीं घणा हीज अळखावणा लागै।

ई पोथी मे म्हैं म्हारो पैलो नाटक अेक गाव री गोमती मे राजस्थान रै बदळतै राजनैतिक परिदृश्य ने आधार बणा र रचणै री चेस्टा करी है। म्है म्हारे दूजै नाटक 'जवरी करी जायोडै में नुवी पीढी रै युवका रै म्हैं थोडा चूटिया बौडया है जिका आपरै माईता

रै प्रति अपणायत री जगा अळगाव नै हवा देवण में झिझक नीं रैया। रगमच सू जुडै कलाकारा नै ओ नाटक कठै तांई दाय आसी ओ तो वैईीज वता सकैला।

ईं पोथी रै प्रकासण सारू पुस्तक मन्दिर बीकानेर अर विनायक कम्प्यूटर एण्ड प्रिण्टर्स बीकानेर कानी सू म्हनै जिको सागीडो सहयोग मिल्यो उणा रो म्हैं घणो आभारी हू। साची पूछो तो उणा रै कारणै ही म्हारी आ पोथी वगत पर प्रकासित हो पायी।

अन्त मे राजस्थानी रा घणा लाडेसर जाण्या-मान्या समीक्षक अर साहित्यकार डॉ किरण नाहटा नै म्हैं हिडदै सू धन्यवाद देवणो चावू, जिका म्हारी ईं कृति री भूमिका लिखणै री म्हारी वात नै व्यस्त होवतै थका भी स्वीकार करी।

निर्मोही व्यास

भूमिका

श्री निर्मोही व्यास रो अेक गाव री गोमती एक गाथाधारित नाटक है। इण नाटक रै मायनै एक गाव रै ओळावै देश री बदळती राजनैतिक हालाता रो चित्रण करीज्यो है। आजादी रै बाद सत्ता राजाया अर सामान्ता रै हाथ सू तो निसरगी पण उण मे आम आदमी री अपेक्षित भागीदारी रो तो तोडो ही रैयो। कारण जूनी सामाजिक–व्यवस्थाया रै चालता अठै औजू भी एक मोटो तबको दोयम दर्जे रै नागरिक रै रूप मे जीवण बसर कर रैयो हो। ई तबके में एक कानी समाज रा बै लोग हा जका नैं बरसा लग हेठी जात आळा कैय'र हाशियै माथै धकेल राख्या हा तो बीजे कानी समाज रो आधो अग अर्थात् लुगाया ही। जिणा रै बाबत ई समाज रो सोच घणो हीणो नै ओछो हो। 'लुगाई अर लुकाई' आळी मानसिकता आळो ओ समाज नीं तो लुगाई री पढाई–लिखाई नैं लेय'र गभीर हो अर न ही उण नै आदमी रै बराबर मानण नैं त्यार हो। घर रै खोरसै में आखै दिन खपती लुगाई नें पाच बरसा मे एकर घर धणी री मनस्या मुजब वोट नाखण नैं जावणो हो। पुरूष वर्ग नै न तो उणरी स्वतत्र सत्ता स्वीकार ही अर न ही उण री बरोबरी री भागीदारी। अैडै मे ओ देश अर ओ समाज आगै बधै भी तो किया बधै ? उण में अपेक्षित बदळाव आवै तो किया आवै ? इण बदळाव अर बधोतरी खातर जरूरी हो कै राज अर समाज दोनू आप–आप कानी सू चेस्टा करै। अैडो कीं लखाव ई देश रा थोडा–सा प्रबुद्ध अर जागरूक लोगा नैं हुया। इण खातर बै शिक्षा रै प्रसार अर राजनैतिक जागरूकता री बात जोर देय नै कैवा लाग्या। होळै–होळै इसा लोगा री बात रो असर होवा लाग्यो। अल्पाश मे ही सही दलित उपेक्षित अर शोषिता नै भणवा रो मोको मिल्यो। आ शोषिता मे भी सिरै रैयो लुगाई रै हाथ भी पढाई–लिखाई रा अवसर कठै–कठै आवा लाग्या। जठै–कठै भी लुगाई नैं पढण–लिखण रो मोको मिल्यो वा आपरी ऊरमा अर उर्जा रो परिचय दियो। इण रैं

पण उणरी पारिवारिक अर सामाजिक स्थिति में बदळाव दीसण लाग्यो। यू बदळाव तो होण लाग्यो पण हाल उण री गति घणी धीमी। इण बदळाव रै मारग म बाधावा अर व्यवधान मोकळा। अैडै मे ई देश रा विचारशील लोगा नैं लाग्यो कै जद ताई राजनैतिक जीवण रै माय भारतीय नारी री भागीदारी सुनिश्चित नीं करीजैला तद ताई अपेक्षित परिवर्तन नीं आवैला। शिक्षा आर्थिक स्वावलम्बन अर राजनैतिक वर्चस्व अै तीन अैड़ा सूत्र है जिका रै सारै भारतीय नारी री स्थिति म क्रान्तिकारी परिवतन आ सकै। इणी सोच रै चालता आज राजनैतिक जीवण मे उणरी भागीदारी नैं सुनिश्चित करण वेई लुगाया खातर ३० प्रतिशत आरक्षण री वात जोर–शोर सू चाल रैयी है। ई सोच रा ही परिणाम है कै देश रै कई हिस्सा म पचायती राज म नारी हिस्सेदारी तय करवा री दीठ सू ग्राम पचायत सू लेय'र जिला परिषद ताई नारै खातर की एक पद आरक्षित करीज्या है। ई आरक्षण रा अनुकूल परिणाम भी सामै आवा लाग्या है पण वरसा सू जिको पुरुष समाज सतारी रास आपरै हाथ मे थाम राखी है वो जल्दी सू आपरा अधिकार छोडवा नै तैयार नीं है। 'पच अर सिरेपच पति' रै रूप म यो हाल भी आपरै या अधिकारा नैं हाथ वसू राखबा वेई हाफळा मार रैयो है। उणरै ई हाफळा री एक बानगी भाडीजी है अेक गाय री गोमती मे।

ई नाटक रै मिस श्री निर्मोही व्यास आपरै सामाजिक दायित्व रो निर्वहन कर्‍यौ है। आज जद कै साहित रै सामाजिक सरोकारा री बात प्रमुखता सू होण लागी है तद लेखक सू भी आ अपेक्षा वाजिब है कै वो आपरै रचनाकर्म सू समाज म बदळाव रै अनुरूप वातावरण बणावै। यू तो राज आप कानी सू कानून कायदा रै सा रै सू बदळाव री चेस्टा करै पण किणी समाज नैं फकत कानून रै बळबूतै माथै बदळयो नीं जा सकै अर भारत जैडै पारम्परिक अर भावना–प्रधान समाज मे तो ओ हथियार जमा ही निमळो सावित हुय रैयो है। ईंया भी प्रेम रो अनुशासन भय रै शासन सू घणो सबळो अर कारगर सिद्ध हुवै है। जकी बात तरक रै तीखा तेवरा अर सावठी बोद्धिक चरचावा सू नीं सधै वा बात साहित रै माध्यम सू सहज ही बणे–सवरै। क्यू कै साहित किवा भावना री ताकत–खास करनै व्यक्ति अर समाज नैं बदळणै री दीठ सू बुद्धि री ताकत सू सदाही सवाई प्रमाणित हुयी है। इण तथ नैं हृदयगम करता थका श्री निर्मोही व्यास इण नाटक रै माध्यम सू शिक्षा री महत्ता अर नारी रै मान–सम्मान री बात नैं उणरी सामाजिक सहभागिता री बात नैं उणरी कर्मनिष्ठा अर खिमता री बात नैं अर भेळै ही उण री जागृति री बात नै इण नाटक मे प्रभावी रूप सू उठायी है।

इण खातर वै गोमती जैडे सशक्त पात्र री रचना करी है। गोमती एक अणपढ मोटयार री पढी–लिखी लुगाई है। साव सूधै भरतार री आ घर–धिराणी आपरी हिम्मत अर होराले रै पाण मूछगाळा मोटयारा नै लारै छोडै। शोषण अर अन्याव रै खिलाफ जूझती आ बाला सत्ता पाय'र भीसळै नीं अधिकार पाय'र मद मे गैळीजै नीं शिक्षा पाय'र गरबीजै नीं। विद्या उणरै जीवण रो भूषण। आ विद्या उण मे सत अर असत नैं परखण आळी विवेक बुद्धि जगावै। उणरी सघर्ष री खिमता नैं बधावे अर उणरै आतम–विसवास ने पोखै। इण विध श्री निर्मोही व्यास गोमती रै माध्यम सू भारतीय नारी सामै एक आदर्श री थापना करै। एक अडै आदर्श री जिण मे वा नारी रै 'अबला' रूप नैं नकारती उणरै शक्ति–स्वरूपा हुवणरी बात करै। अठै आ बात खास करने जाणबा जोग कै ई नारी री शक्ति रो मोटो आधार है उणरो नैतिक आचरण अर समाज री उपयोगी व्यवस्थावा अर स्वस्थ परम्परावा रै प्रति उणरो सकारात्मक सोच।

बात जद उपयोगी व्यवस्थावा अर समाजिक परम्परावा री चाल पडी तो अठै एक व्यवस्था पर थोडै विस्तार सू बात करणी चावूला। आ व्यवस्था है–परिवार नामक सस्था री व्यवस्था। आ सस्था जितरी मजबूत हुवैला वो समाज भी उतरो सशक्त अर सबळ हुवैला। क्यू कै वस्तुत व्यक्ति अर समाज रै बीच रो सेतु है आ सस्था। हजारा नैं हजारा बरसा रै अनुभव री उपज है आ सस्था। इण सस्था रो महत्व इतरी सी बात सू समझ म आवै कै आ सस्था स्वस्थ अर मजबूत है तो समाज भी स्वस्थ अर मजबूत है अर आ सस्था कमजोर है तो समाज भी बेमार अर निमळो हुवै। अैडै मे समाज नैं बिखरता कीं ताळ नीं लागै। साची पूछो जणास तो व्यष्टि रै उन्नयन अर समष्टि रै विकास रो आधार भी आ ही सस्था है। भारतीय समाज मिनखा जीवण नैं जिण च्यार आश्रमा मे बाटयो है उण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है गृहस्थाश्रम। ओ गृहस्थाश्रम ही बाकी सगळा आश्रमा रो पोषक है। ओ ही बारो आधार है अर विवाह उणरी धुरी है। आपारै अठै विवाह एक समझोतो नीं है अठै तो ओ एक पवित्र गठबन्धन है। ओ मिनख री निरकुश अर उद्दाम कामवासना री तृप्ति रो साधन भर नीं है वरन् उण असीम ऊर्जा नैं व्यवस्थित अर सयमित करबा रो माध्यम है। आ विवाह नामक सस्था ही तो है जकी के मिनख नैं मिनख बणावै नींतर स्वेराचारी जीवण अर निरकुश भोगवृत्ति न अपणाया बाद तो मिनख अर डागर मे फरक ही काईं रैय ज्यावे। जे मिनख री भोगवृत्ति माथै अकुश नीं लगायो तो उणरो पतन अवश्यम्भावी है इण खतर उण नैं मर्यादित अर

रायमित जीवण जीवणरी प्रेरणा देवण अर उणरी उचित व्यवस्था करण वेइ भारतीय समाज म विवाह नै एक अत्यन्त पवित्र संस्कार री संज्ञा दीरीजी है। विवाह रै बन्धन नै जन्म–जन्मान्तरा रो नातो स्वीकारीज्यो है। ई सोच रै लारै एक गूढ दर्शन है अर श्री निर्मोही व्यास उण रै मर्म नै समझ्यो है। तदही तो वै नाटक रै प्रारम्भिक दोर म गोमती अर ऊदै री बातचीत रै मिस ईं पवित्र रिश्तै री भारतीय समझ अर संवेदना नै वाणी दी है।

अठै लग अक गाव री गोमती नामक नाटक रै प्रतिपाद्य माथै विचार करीज्यो है। आगै थोडी–सी चरचा इण ही संकलन रै दूसरे नाटक री भी करल्या। 'जवरी करी जायोडै' शीर्षक सू संकलित ओ लघु नाटक पैलै नाटक सू बिल्कुल भिन्न मिजाज रो है। जठै पैलै नाटक म लेखकीय साच आदर्शवादी विचारा सू प्रभावित रैयो हे यठै इण नाटक में उणरो झुकाव यर्थाथ कानी ज्यादा लखावै। संस्कारहीन शिक्षा अर उपभोक्तावादी संस्कृति रै दुष्प्रभाव सू स्वस्थ परम्परावा अर अनुकरणीय जीवनादर्शन तेजी सू ध्वस्त हुवता जा रैया है। स्वारथा सू सिकुडतो मिनख रो मन इतरो छोटो हुयग्यो है कै उण मे अणजाण का अपरिचितारी तो बात ही अळघी आत्मीय अर स्वजना खातर भी ठौडनीं बची है। ऐडे ही एक घोर सुवारथी बेटे री हीणवृत्ति अर ओछी मानसिकता रो मर्मस्पर्शी अकन इण एकाकी मे हुयो है। यू ओ जथारथ रै धरातल पर रच्योडो नाटक है पण अन्ततोगत्वा ओ नाटक भी मिनख नैं ऐडी वृत्तिया सू विमुख हुवण नैं ही प्रेरित करै।

ऊपर रै विवेचन मे किंचित् विस्तार रे साथै आ नाटका री वैचारिक पृष्ठभूमि माथै विचार करयो ह आगे संक्षप मे उणरी दूजी विशेषतावा री चरचा भी करल्या। नाटकीतया सू परिपूर्ण दृश्य–विधान अर्थ पूर्ण संवाद सहज संवेद्य भाषा आ नाटका री उल्लेखया जोग विशेषता है। इतरा कुछ होवा रै बावजूद भी खासो कीं बाकी है। शहरी परिवेश मे जीवा वाळो लेखक बौद्धिक स्तर माथै ग्रामीण समाज साथै जुडै पण भावात्मक स्तर माथै उणरै साथै जुडण खातर अर बारे अनुभव संसार रो साझीदार बणण खातर जिण नैकट्य री जरूरत हुवै प्राय बो उणसू वंचित रैवे। श्री निर्मोही व्यास भी इणरा अपवाद नीं ह। आशा करू केवे आपरे आग रै रचनाकर्म मे प्रवृत्त हुवण सू पेली ऊण्डी गोत लगावैला।

किरण नाहटा

ऐक गांव
री गोमती

अेक गाव री गोमती

पात्र

१ गोमती	अेक हिम्मत आळी लुगाई।
२ ऊदो	गोमती रो धणी।
३ घमजी	गाव रा अेक समझदार पच।
४ आसियो	गाव रो मोटियार पच।
५ मगळजी	गाव रो लळवायरो सेठ।
६ रमतियो	मगळजी रै भायलै रो भाणजो।
७ सोहनलाल	गाव रो सिरैपच।
८ धूळजी	गोमती रो वाप।
९ धानकी	गोमती री मा।
१० भीमलो	गोमती रै भुआ रो बेटो भाई।

पैलो दरसाव

(दिन री बेळा। मगळजी आपरी बैठक मे बैठयो सन्दूकडी मे राख्योडा गैणा गाठा सभाळै कै बारै सू कोई रै आवण रो खडको सुणीजै।)

मगळजी — (सन्दूकडी नै पूठी बद करता) लागै रमतियो आयग्यो दीसै। (रमतियो माय आ जावै)

मगळजी — ऊदियो मिळयो क नीं ?

रमतियो — मिळग्यो।

मगळजी — कठै हो ?

रमतियो — घमजी रै अठै।

मगळजी — बारै अठै क्यू मरयो हो ?

रमतियो — थानै सायद ठाह कोनी। घमजी री लुगाई बीं सू धरमेळो घात राख्यो है।

मगळजी — बो फेर कद सू ?

रमतियो — होयग्या हौवैला दो–तीन मइना।

मगळजी — भळै !

रमतियो — अठै सू जणै–कणै भी बारै जावै समझो बारै घरे हीज ढूकै।

मगळजी — ई रो म्हनै नीं पतो। अबै कठै है ?

रमतियो — लारै बाडै मे गाया नीरै।

मगळजी — घमजी री घरआळी तो ब्हात तेज है। बीं कोई पाटी ता नीं पढा दी बीं नै ?

रमतियो — पतो नीं। आ तो जरूर सुणीं कै बा बीं नै बीनणी लेवण वास्तै सासरै जावण रो बार–बार कैय रैयी है। (मगळजी हसबा लागै)

रमतियो — हस्या कीकर ?

मगळजी — तो काई ऊदियो सासरै जासी आपरी बीनणी लेवण नै ?

रमतियो — क्यू ? बो ला नीं सकै काई ?

मगळजी — ले आयो ! सासरैआळा छोरी नै भेजसी जद नीं !

रमतियो — बानै भेजणै में काई दिक्कत है ?

मगळजी — दिक्कत ! बीं बावळै सागै आपरी छोरी नै भेजर काई बानै बींरी जिदगी खराब करणी है ?

रमतियो — हा बात तो थारी सही है। बो लुगाई रै मामलै में तो सपफा डफोळ

है। बीं नै ओजू दुनियादारी रो ही ग्यान कोनी तो लारै आवण आळी नै वो किया परोटसी?

मगळजी — बीं नै तो ओ भी नीं ठाह कै लुगाई हुवै काईं है ?

रमतियो — जणै हीज लुगायां नै देखतां ही बीं रो सास ऊंचो चढ जावै। उण दिन सैणियै री बहन कोई काम सूं म्हारै कनै आई तो बो अेकदम इस्यो चिमकियो कै भाजर लारै बाडै में लुकग्यो।

मगळजी — लळवायरो है जणै हीज तो। बो जाणै ही कोनी कै मिनख–लुगाई रो मेळ काईं हे ?

रमतियो — पण अबै म्हनै लागै कै घमजी री लुगाई बीं नै कीं न कीं बारखडी तो पढाई हे। जणै ही तो बीनणी लावण वास्तै त्यार होयग्यो।

मगळजी — बीं रै त्यार होवण सूं काईं हुवै ! जारी तो मूं री खारी।

रमतियो — कींकर ?

मगळजी — बै लोग छोरी भेजणी तो दूर बीं नै घर रै माय ही नीं घुसबा दै। म्हें तो वानै जाणूं हूं नीं।

रमतियो — काईं पतो सासरै आळां नै दया आ जावै अर छोरी नै सागै भेज दै।

मगळजी — भेज्या रे भेज्या ! बीं री जद मा मरी अर बींरा सासू–सुसरा अठै मोकावण नै आया तो बीं रै बाप घणो ही जोर देयर कैयो – अबै म्हारो घर सभाळण वाळी कोई कोनी। म्हें ऊदै नै भेजूं थे बींरी बीनणी नै मुकळावो कर'नै वैगी नडा दिया।

रमतियो — तो वा काईं उथळो दियो ?

मगळजी — बोल्या–म्हारी छोरी कोई नासमझ कोनी। अठै आय र बींनै थारो खुणखुणियो नीं बजाणो !

रमतियो — खुणखुणियो !

मगळजी — बीं ऊदियै नै बै खुणखुणियो ही समझै हा। आ बातां नै च्यार साल होयग्या।

रमतियो — जणै तो हो चूकी बात।

मगळजी — अेक खास बात भळै और कैयग्या – म्हारी छोरी अठै आज आवै ना काले। भणी गुणी छोरी नै थारै अणपढ छोरै कनै भेजां काईं म्हारो माथो खराब है ?

रमतियो — उण बगत बीं ऊदै रै बाप सूं पूठो जबाब नीं देइज्यो ?

मगळजी — जबाब देवण जोगो होवतो तो देवतो। बो जाणै हों'चै बीं रै कानी सूं टक्का बटिज्योडा है। बा दिनां मे तो ऊदियै नै बोलणै रो भी सऊर कोनी हो।

रमतियो — अबै किस्यो है ? बाप रै मरयां बाद सूं तो अठै हीज है। म्हें तो अबार तईं बीं में कोई लूणलखण आळी बात देखी कोनी।

मगळजी — घमजी री घरआळी कोई फकीर सूं, जे मादळियो लेयर ईं रै बाध दियो हुवै तो ठाह नीं।

(इणी बगत ऊदो माय आ जावै)

मगळजी	कठै गयो हो ?
ऊदो	घमजी रै घरा।
मगळजी	म्हनै कैया बिना ही।
ऊदो	उण बगत थे अठै हा कोनी।
मगळजी	ओ रमतियो तो हो ?
ऊदो	अै भी निजर नीं आया।
मगळजी	तो काई घर नै खुलो ही छोडग्यो ?
ऊदो	नीं तो। बाडो उडकार गयो हू।
मगळजी	गयो रै गयो। बठै थारो काम काई हो ?
ऊदो	बाईजी सू मिळणो हो।
मगळजी	बाईजी घमजी री घरआळी सू ?
ऊदो।	हा जी। बा म्हनै धरम रो भाई मान राख्यो है।
मगळजी	कोई काम हो या इया ही हताई करणै गयो परो ?
ऊदो	नीं गयो तो काम वास्तै ही हो।
रमतियो	यो ही तो बता काम काई हो ?
ऊदो	बा नै पूछणो हो कै मुकळावै खातर काई करणो ?
मगळजी	मुकळावो।
ऊदो	हा जी। म्हनै परणीज्या नै पन्द्रै बरस होयग्या। ओजू तई मुकळावो नीं हुयो।
मगळजी	पण मुकळावो तो सासरै में हुवै।
ऊदो	ओ तो म्है भी जाणू।
मगळजी	तो काई सासरै जावण रो मतो है ?
ऊदो	हा जी। क्यू बठै जावण में कोई आट है ?
मगळजी	आट तो क्यारी है। पण बिना बुलाया जावण मे कोई इज्जत नीं रैवै।
रमतियो	मामाजी ठीक कैवै। बै छोरी आळा है। बानै आपरी बेटी रो मुकळावो करणो है तो बानै चइजै कै बै तनै बुलावण रो न्यूतो भेजै।
मगळजी	तू जे खुद चलार बठै गयो अर बै मुकळावो करणै सू नटग्या तो?
ऊदो	नट क्यू जासी ? म्हैं कोई अैरगैर कोनी बारो जवाई हू।
रमतियो	(हसतो) अरे मामाजी तो थारै सू मसखरी करै है। बै भला क्यू नटसी।
मगळजी	तो ओ किस्यो म्हारै कैये रो बुरो मानै है ?
ऊदो	बुरो क्यू मानू ? थे तो म्हारा माइत हो।
मगळजी	खैर तू आ बता सासरै तो पैली दफै ही जावैलो ?
ऊदो	पैली दफै क्यू ? अेकर ब्याव हुयो जद गयो हो नीं।
मगळजी	उण बगत तो ब्होत छोटो हो।
ऊदो	हा आठेक साल रो हो।

मगळजी	अयै तो तू सासरै रो मारग भी नीं जाणतो होसी ?
रमतियो	सासरो ई रा है कठै ?
मगळजी	भोपाळसर।
रमतियो	है तो थोडो अळगो ही।
मगळजी	जणै हीज कैवू, जावण री क्यू जिद करै ? अळगी भू अरौंघा मारग अर आ लू वाजै।
रमतियो	चालतो–चालतो आदमी इया ही अधमरो हा जावै।
मगळजी	अर जे कुजोग सू कोई गळत रस्तो अपड लियो तो ...?
ऊदो	तो काईं हुयो ? कोई दूजै गाव पूग जासू, इत्तो ही तो?
रमतियो	वठै सू फेर भोपाळसर आणो सहज कोनी।
ऊदो	देखो थाकणी तो म्हनै आवै नीं .. ।
रमतियो	पण खामख्या गोतो तो पडग्यो नीं।
ऊदो	इया पडो तो पडो। जठै तईं वणसी सही मारग पूछया विना आगै नीं बधू।
मगळजी	जणै वा। जरूर जा।
रमतियो	कद जावैलो ?
ऊदो	सोचू कालै भखावटै ही निकळ ज्याऊ तो दुपारै तईं भोपाळसर पूग जासू।
रमतियो	फेर सोचणो क्यारो ? मतो ही कर लियो तो जा परो।
मगळजी	(बडेरपणो दिखाता) लोटडी पाणी री सागै ले जाये।
ऊदो	हा जी। बींरै बिना तो ई गरमी में पार ही नीं पडै।
रमतियो	दिन में तावडो लाय किस्सी कम बरसावै है ! तिस्स तो लागणी ही है।
मगळजी	कुरतियो काईं ओ मैलो ही पैरयो राखसी ?
ऊदो	ई नै तो अबार धोय नै सूखा देसू।
रमतियो	अर धोती ?
ऊदो	धोती तो इस्सी घणी मेली कोनी।
मगळजी	म्हें कैवू, ई नै भी धो काढ। कुरतियो धोवै जद ई रै भी दो थापी मार दियै।
ऊदो	थे कैवो तो दोना नै ही धो काढसू।
रमतियो	जणै पैला ओहीज काम कर।
ऊदो	इया तो पगरखी भी बोदी है।
मगळजी	पगरखी तो बोदी भलै ही हुयो फाटयोडी नीं हावणी चइजै।
ऊदो	फाटयोडी तो कोनी।
रमतियो	जणै काईं ? मारग मे धूड सू भरीजैली तो बिया ही।
मगळजी	तू तो कपडा कानी ध्यान दै। आनै बैगासा धोय'र सुखो दै।
ऊदो	अच्छा जी। **(कैवतो माय कानी जावै परो)**
मगळजी	**(जीभ भींच्या भींच्या)** आपणै मौज बणगी।

रमतियो — कींकर ?

मगळजी — ईं री बऊ आसी तो आपणो कैयो तो पैला मानसी। फेर तो ।

रमतियो — फेर काईं ?

मगळजी — आसी जणै रैसी तो अठै हीज।

रमतियो — बा तो रैवणी ही है। ओ जद अठै रैवै तो बा कठै दूजी जगा जायर तो रैवण सू रैयी ?

मगळजी — ओ है बिलकुल लल्लू अर बा बतावै ब्होत हुसियार। दडाछट तो बा इगरेजी बोले।

रमतियो — जणै तो बा ईं नै कोई घास ही नीं घातैली।

मगळजी — माजणा तो बा ईंरा देखतै ही पाड लेसी।

रमतियो — सही कैवो।

मगळजी — जिकै रै मूडै बाई कैंवता राण्ड नीसरै अेडो आदमी तो छानो ही नीं रैवै।

रमतियो — म्हनै लागै ओ लुगाई रै आगै ऊभो ही नीं रैवैलो।

मगळजी — अबार दूर सू ही जिको लुगाई नै देखर भय खावै बो लुगाई कनै तो जा ही नीं सकै।

रमतियो — ईं रो मतळब है ईं री राता तो खेत मे ही बीतैली।

मगळजी — आ तो साम्हैं दीखै।

रमतियो — जणै तो !

मगळजी — बोलो रैय। आगै री बाता कैवण री नीं हुवै।

रमतियो — साची निबळो बींद बैर रो गिराक हुवै।

मगळजी — लल्लूपच नै बैटी देवै जद पाडासी तो डागळै ऊभै हीज। पण तू कठैई म्हारै कनलै डागळै मत चढ जाये ?

रमतियो — (हसतो) थारै होवता थका काईं ?

(इण बात पर दोनू अेडा हसै कै हसता ही जावै हसता ही जावै। इण बीच पडदो भी हेटै गिरतो जावै।)

❑

दूजो दरसाव

(दुपारै री बेळा। धूडजी रो खेत। खेत रै अेक नाकै ढाणी बणियोडी है। ढाणी रै आगै छिया में माचो ढाळयोडो है। कनै ही थोरी सू ढकी पाणी री मटकी पड़ी है। दूर सू ओळू रा गीतरी रागळी करती गोमती आवै।)

गोमती	(सागै ल्याई घास री भारी नै अेक कानी न्हाखती खुदोखुद) लै रे जीवडा ओ काम करता–करता ही ऊमर बीत जाणी है। बारवीं मे अेकर फेल काई होयगी जी सा नै तो गाव बुलावण रो मौको मिळग्यो। नीं जणै आज बी अे मे होवती। पण जी सा नै म्हारो मामाजी रै अठै सैर मे रैवणो ही नीं सुवायो। दोस अबै कीं नै दू ? भाग मे खेत रो खोरसो करणो ही लिख्यो हो बैठी करु हू।
	(इणी बगत काधै माथै झोळो लोटडी लटकाया अर हाथ में लाठी लिया ऊदो आ जावै)
ऊदो	(गोमती सू) तिस्स लागी है। पाणी मिळसी काई ?
गोमती	क्यू नीं ! आ माटकी भरी पडी है। पीवो नीं।
	(ऊदो झोलीझड़ा हेटै राखर मटकी माथै सू थोरी हटावै)
गोमती	काई साख मे ?
ऊदो	माळी हू। (कैय नै मटकी सू लोटो भरै अर ऊभो ऊभो ही पाणी पीवै।)
गोमती	बैठ जावता।
ऊदो	बैठया कींकर सरै। आगै भी तो जाणो है।
गोमती	थोडी देर बिसाई ले लो फेर जाया परा।
ऊदो	बैठणो तो नीं चइजै पण थ कैयो तो ल्यो थोडी ताळ बैठ जावू। (कैय नै माचे पर बैठ जावै।)
गोमती	साख पूछणै रो बुरो तो नीं लाग्यो ?
ऊदो	कींकर !
गोमती	अजकाळै कीं री जात पूछणी आछी नीं समझे। (कैंवती अेक ठोड बैठ जावै)
ऊदो	म्हारै गाव में तो म्हैं कदै इस्सी बात नीं देखी।
गोमती	गावा में ओजू ई बात रो बुरो नीं मानै जणैई तो पूछयो। सैरा मे

तो जात कोई पूछै ही कोनी।

ऊदो — देखो सा म्हैं तो गाव रो आदमी हू। म्हैं आ बाता नै काईं जाणू? पण अेक बात है। जे म्हैं छोटी जात रो होवतो तो काईं थे म्हनै पाणी नीं पीवण देंवता ?

गोमती — म्हें तो फेर भी पीवण देवती पण थानै जे आ ठा पड जावती कै म्हे हेटी जात वाळा हा थे काईं अठै रो पाणी पी लेवता ?

ऊदो — म्हारी समझ मे पाणी री कोई जात नीं हुवै। तिस्स लागै तो जठै पाणी मिळ जावै बठै ही पी लेवणो चइजै।

गोमती — म्हारो मत भी ओहीज है।

ऊदो — जणै तो वा।

गोमती — गाव किस्यो ?

ऊदो — रायसर।

गोमती — आगै कठीनै ?

ऊदो — भोपाळसर तईं।

गोमती — जणै तो पूग्या समझो। ओ धोरे ढळतै ही भोपाळसर। बठे कींरै अठै?

ऊदो — धूडजी रै अठै।

गोमती — धूडजी ।

ऊदो — धूडजी गैलोत।

गोमती — जाणगी। वारै अठै कींकर ?

ऊदो — इया ही मिळबा नै।

गोमती — बा सू कोई रिस्तैदारी है ?

ऊदो — आहीज समझलो।

गोमती — काई नाव है ?

ऊदो — ऊदो।

गोमती — **(अेकाअेक चौंकती सी)** आ नाव तो बारै जवाईसा रो है।

ऊदो — हा। म्हारा बै सुसरोजी है।

गोमती — **(माथे पर झट पल्लो लेवती)** जणै तो थे म्हारा बैंदोई हो।

ऊदो — किया ?

गोमती — म्हैं धूडजी री भतीजी हू। थानै जिकी ब्याही बा म्हारी बहण है।

ऊदो — **(हाथ जोडतो)** राम–राम।

गोमती — राम–राम। **(अेकाअेक उठती)** थे अबै थोडा थम्या। ईं माचै पर आडा होय नै कमर पाधरी करो जितै म्हैं पूठी आवू। **(कैंय'नै फुरती सू भीमला ओ भीमला जोर जोर सू हेला पाडती दूर चली जावै)**

ऊदो — **(ऊची आवाज में)** अजी सुणो ता सरी।

गोमती — **(जावती जावती)** म्हैं घणी देर नीं लगावू। अदाळ पूठी आई।

ऊदो — **(खुदोखुद)** जोग री बात। पैलीपोत साळी जी सू ही मिळणो हुयो।

आ सू सासरै रा सारा समाचार तो मिळ जासी। पण अक तरियो है आ कै आ कीकर कैयसू कै म्हैं घरवाळी नै लेवण वास्तै आयो हूं। म्हनै तो कैंवता ही सरम आवै। अेक बात भळै जे आ घरवाळी रो नाव पूछ लियो जणै। म्हैं तो नाव ही नीं जाणूं। पता नीं लोग बाग तो आयै दिन सासरै हो आवै। म्हारै तो पैलड़ै में ही धूजणी छूट रैयी है। अेक रगड़ो भळै और है। सासूजी जे बींनै भेजणै सूं मना कर दियो या ओ कैयनै कै कातीसरो नीवड़्या पछै भेजसा टाळ दियो जद ? म्हैं सूं तो आगै बोल्यो ही नीं जावैलो। (गोमती नै अळगै सूं आवती देख'र) आवै दीखै। म्हारै माय आ सबसूं बडी कमी है कै म्हनै चोखी तरिया बात करणी नीं आवै। मूंडै सूं कोई आवळ–कावळ बोलीजग्यो तो ?

(इणी बगत गोमती पूठी आ जावै)

गोमती	काईं सोचवा लागग्या ? आड़ा नीं हुया ?
ऊदो	आडो तो ईं खातर नीं हुयो'कै कठै नींद नीं आ जावै।
गोमती	तो काईं हुयो ? घडी क ले लेंवता नींद।
ऊदो	ना–ना। अठै सूतो कोई चोखो लागू काईं ?
गोमती	क्यू नीं लागो ?
ऊदो	वा जी ? जठै कोई अेकली डावड़ी हुवै वठै साची पूछो तो कोई मोटियार नै जावणो ही नीं चइजै। म्हैं तो पाणी पीवण नै आयग्यो ओ ही ब्होत है।
गोमती	अजी मन साफ हुवै तो कठै भी जावो नीं काईं फरक पडै।
ऊदो	थारो सोचणो थारी जगै सही है। पण म्हनै तो ओ ब्होत अळखावणो लागै।
गोमती	लाग्या–ओ–लाग्या। ल्यो अबै नचींता होयर बैठो। भीमलै नै भेजर खाणो मगवायो है।
ऊदो	कठै सू ?
गोमती	लागती मे म्हारा अेक बाबोसा है बारै अठै सू। (हाथ रो इसारो करती) इजा ओ पाखती खेत बारो हीज है। बै सै रात–दिन अठै खेत में ही रैवै।
ऊदो	आ तकलीफ क्यू करी ?
गोमती	ल्यो ऽऽ। ईं मे तकलीफ क्यारी ? पावणा नै काईं भूखो राखा?
ऊदो	म्हारो मतळब है गाव जाय नै जीम लवता।
गोमती	क्यू, अठै जीमणो आछो नीं लागै ?
ऊदो	आ बात कोनी। पण अठै अेकलो जीमतो चोखो नीं लागू।
गोमती	अजी आ कैयो कै साळी रै हाथ रो पुरस्योड़ो जीमणो नीं चावो?
ऊदो	थे तो बात नै कठे री कठै लेयग्या। थानै बाता री इत्ती उकत कठै सू आ जावै ? इया लागै जाणै बाता री तो खाण हीज हो।
गोमती	बाता रै सिवाय लुगाया नै आवै ही काईं है ?

(बात नै दूजी कानी मोड़तो) औ भीमलो जी कुण है?
म्हारी भुआ रो बेटो भाई।
अठै थारे सागै ही काम करता हुवैला ?
काम तो क्यारो करै। हा खेजडी रै हेटै बैठयो खेत री रूखाळी जरूर करै। ईं बात रो बरोबर ध्यान राखै कै कोई डागर खेत में नीं बड जावै।
आ तो ब्होत आछी बात है।
(इणी बगत भीमलो भाजतो सो हाथ में भातो लिया आवै)
बैगो आयो रे।
(भातो झलावतो) अेकै सास भाजतो ही गयो अर भाजतो ही आयो।
जणै ही तो सास भरग्यो। खाणो तो बणग्यो हुवैला ?
हा। जणैई तो बैगो सो घतवार पगोपग पूठो आयग्यो।
अेकर बैठ जाओ अर थोडो सुसतालो।
(भीमलो अेक जगै बैठर थोडो सुसतावै।)
(माय सू थाळी लाय नै खाणो पुरसती)
खाणो तो ओजू गरमागरम ही है।
इत्तै सै काम वास्तै आ नै बेमतलब ही तग्गड दियो।
(थाळी आगै खिसकाती) तग्गड दियो तो कुणसा ईं रा पिराण निकळग्या? ल्यो जीमो।
थे भी तो जीमो।
म्हे तो घडी क पैला ही तो जीम्या हा। थे जीमो।
(ऊदो सरमा मरतो होळै होळै थाळी में हाथ घातै नै जीमणो सरू करै)
बाजरी री रोटया है नै फळया रो साग। जी सोरै सू जीमो। कोई ऊतावळ कोनी।
ऊतावळ तो अब क्यारी है।
जीमण रै बाद ऊपर सू आ छाछ पी लिया।
(छाछ रो अेक घूट पी नै) छाछ तो ब्होत मीठी है।
भोर में बिळौणो कर्यो जद री है। (थोड़ी ठैर'नै बाता रा चूटिया घटकावती) अजी हा म्हारी बहण तो थारी देख्योडी होसी ?
नीं तो।
(पाणी रो लोटो भर नै कनै राखती) ब्याव हुयो उण बगत भी नीं देखी?
उण बगत रो कीं नै ध्यान ? ब्होत छोटा हो।
अबै तो बा म्हारी जित्ती डीगी डचकळ दीखै। पण
सपा काई ?
कैवणी तो नीं चावू पण जीभ बळी बस मे कोनी।

ऊदो — इस्यी काईं बात है ? बतावण में कीं हरज है तो मती बतावो।

गोमती — हरज तो कोनी पण बहण री बुराई करती आछी नीं लागू। थे भी काल नै कीं ऊधी सोचो।

ऊदो — (थाळी में ही चळू करतो) म्हैं तो कोई ऊधी सोचू नीं। थे नीं बताणो चावो तो दूजी बात है।

गोमती — खैर थे जद बुरो नीं मानो तो फेर म्हनै कैवण मे काईं हरज है? बात आ है सा ।

ऊदो — (थाळी अेक कानी खिसकातो) हा—हा कैवण मे सको क्यारो?

गोमती — म्हारी बहण रो उणियारो साची चोखो कोनी। कठै थे अर कठै या? थारी तो जूती रै बरोबर ही कोनी।

ऊदो — कोई बात नीं।

गोमती — पण कीं तो चैरो सावळ होणो चइजै। बींरा तो दात ही आगै सू इया बारै निकळयोडा है कै देखता ही डर लागै।

ऊदो — अेडी काईं बात है ?

गोमती — हुबहू डाकण ज्यू लागै। नाक अेकदम फींडो अर आख्या जाणै चैरकै पडी भेंस री हुवै।

ऊदो — ईं मे बींरो काईं दोस ? आ तो भगवान री रचना है।

गोमती — अजी रचना काईं इस्यी ही हुवै काईं ? कान अेक कानी हथिणी रो सो लागै तो दूजै कानी रो कादै सू भर्‌योडी कुतडी रो।

ऊदो — जणै भगवान कीं सोच—समझर ही घडी है।

गोमती — इस्यी लुगाई नै सागै ले जावणो मिनख रो मान घटाणो है।

ऊदो — थे कैवो जिकी तो साची पण अै तो जोग—सजोग री बाता हैं।

गोमती — थे भी जोग—सजोग नै मानो काईं ?

ऊदो — क्यू नी ?

गोमती — जणै विधाता जिकी लिख दी'कै (हाथ रै इसारा सू समझावती) बीं नै बीं सू ब्याव करणो है तो बोहीज हुवै ?

ऊदो — हुवै तो बोहीज। बारै लिख्यै नै कोई टाळ नीं सकै। सागै तो बाहीज रैणी है जिकी भाग मे लिख्योडी है।

गोमती — (थाळी ले जाय नै अेक कानी माजती माजती) मानी थारी बात। पण जीवती माखी गिळणै में काईं सार है? देखी नीं हुवै तो बात अलायदी। आख्या सू देखणै रै बाद अणजाण बण'र कोई भूतणी नै गळै लगावै तो ईं में कुणसी अकलबदी है?

ऊदो — देखो सा बडेरा कैयग्या कै मिनख—लुगाई री जोडी तो ऊपर सू बणीजर आवै।

गोमती — (बात रो हुकारो देवती) आवै।

ऊदो — सो म्हैं तो बडेरा रै कैयै नै टाळ नीं सकू। जिकै रै सागै फैरा लिया है बा भलै ही किस्यी भी हुवो म्हारै तो बाहीज आडी आसी।

गोमती सोचो तो थे चावै दावै ज्यू, पण ईं में थारी जिद रै सिवाय और कीं नी है। म्हारी बात मानो अेकर फेरू सोचो। (कैंवती थाळी राखवा नै माय जावै परी)

ऊदो ......। (कोई उथळो नीं देवै)

गोमती (पूठी आय'नै) काईं सोच्यो ?

ऊदो काईं सोचू ?

गोमती थानै जे म्हारी बहण सू कोई सवाई मिळ जावै दीखत में भी बीं सू कई गुणा फूटरी लागै अर खासी पढी लिखी भी हुवै फैर भी काईं थे बीं काळी भैंस नै ही चासो?

ऊदो म्हारै चाया—नीं चाया काईं हुवै ? भाग में जद भैंस ही लिख्योड़ी है तो गाय कठै सू आसी ?

गोमती जणै था तो पक्की धारली कै म्हारी काळी कलूटी बहण रै सागै ही जीवन बसर करणो है।

ऊदो बो तो करणो ही पडसी।

गोमती बींरै सिवाय दूजी कोई दाय नीं आवै ?

ऊदो म्हारै वास्ते तो बाहीज अपसरा है।

गोमती बुरो मत मान्या ? म्हैं थानै जे आ कैवू कै म्हैं खुद थारी चूडी पैरबा नै अर अठै सू ही थारै सागै थारै घरै चालबा नै त्यार हू जणै।

ऊदो ... .. राम—राम राम—राम। ओ थे काईं कैवो ? अेडी बात तो म्हैं कदै सोच ही नीं सकू। पराई लुगाई तो सदा मा—बहण रै बरोबर हुवै।

गोमती जणै या। आगै कैवण री तो अबै गुजाइस ही कोनी। थे जीत्या म्हैं हारी। क्यू, अबै तो राजी ?

ऊदो ईं में बेराजी होवण री तो बात ही कोनी। था कैयो म्हैं सुणी।

गोमती बस ईं में ही फुटरापो है। नीं जणै लोग कोई भी बात नै आगै सरकाता देर नीं लगावै।

ऊदो अेडी घाईघूती सू भगवान बचावै।

गोमती अच्छा अबै आ बतावो सासरै अबार ही जाणो है कै सिझया री गुदळक बेळा मे ?

ऊदो अबार ही चल्यो जावू तो ठीक है।

गोमती तो इया करो। ईंनैकर आ अेक पगडडी है। पाधरी गाव कानी ही जावै। थे तो ईं नै अपडलो।

ऊदो गाव मे फेर कठीनै कानी मुडणो ?

गोमती ... गाव मे बडता ही डावै कानी अेक लाठो सो पींपळ रो दरखत है। बींरै चिपता ही रामदेवजी रो मिंदर।

ऊदो समझग्यो। डावै कानी पींपळ अर पींपळ रै लगता ही रामदेवजी रो मिंदर।

गोमती मिंदर री लारली गळी मे मुडसो तो जीवणै कानी तीजो छोड र चौथो घर घूडारामजी रो ही है।

ऊदो — जाणग्यो। अबै म्हैं जासू परो। (उठ'र लोटड़ी झोळै में घातै'नै लाठी हाथ में लेयर पगडडी कानी टुरणै लागै)

गोमती — सिधावो। अरे हा अठै विंसाई लेवणरी बात रो कठै आगै जिकर मत करया।

ऊदो — अजी अै बाता कोई आगै कैवण री हुवै काई ? थे ेचींता रैवो। (कैय नै पगडडी झाल लेवै।)

गोमती — (खुदोखुद) वा ओ पावणा। परीक्षा मे तो थे अेकदम खरा उतरया हो। भगवान थानै लाबी ऊमर देवै'नै नीरोग राखै। (दरसका सू) साची आ रै माय जिको मानखो है लोकलाज है कवळो हिडदो अर अपणायत है बा दूजा में ढ़ढया नीं मिळै। अधरम तो आरै आसै पासै ही नीं फटकै। समाज नै आज अेडा ही साचै मिनखा री जरूरत है। (खुदोखुद) लै रे जीवडा वाता करया काई हुसी। नीनाण नीं काढया तो जी सा काई कैवैला। चालू, पैला ओ ही काम करू। फेर पावणा पधारया है तो गाव भी वैगो जाणो है। (कैंवती हसियों उठाय नै खेत में जावै परी कै लारै सू मच पर अधारो घिरणै लागै।)

❑

तीजो दरसाव

(सिझ्या री वेळा। धूडजी रै घर रो आगणो। धानकी बैठी ऊखळी में खीचडो कूटै कै बारै सू भीमलो आ जावै)

धानकी — (मूसळ हेटै राखर) काईं बात है भीमला ? आज तो वैगो घणो आयो रे?

भीमलो — तो अेकलो बठै काईं करतो ? गोमती बाई रै सागै म्हैं भी आयग्यो।

धानकी — तो काईं गोमती भी आई है ?

भीमलो — या नीं आवती तो म्हैं क्यू आवतो ?

धानकी — या है कठै ?

भीमलो — गुवाड मे मामोसा ऊभा हा कै या सू बाथेडो करवा नै ठैरगी।

धानकी — बा सू फेर काईं बाथेडो करणो हो ?

भीमलो — पतो नीं। खेत सू आई जद रीस मे भरीज्योडी हीज आई।

धानकी — भळै। खेत मे कोई कीं कैय तो नीं दियो ?

भीमलो — नीं तो।

धानकी — तो फेर रीस आई कीं बात पर ? कठै कोई सू माथो तो नीं लगा लियो?

भीमलो — माथो तो बठै कीं सू लगावती ?

धानकी — या कठै कोई टाटियो तो नीं खायग्यो ?

भीमलो — खावतो देख्यो तो कोनी पण अेक टाटियो ढाणी रै आगै मडरातो जरूर देख्यो।

धानकी — खेत नै अेकाअेक छोडर आवण रो कीं तो कारण होसी ?

भीमलो — ओ तो बींनै ही पूछो।

धानकी — रीस भी आई हुवै तो आ तो बतावै कै आई कीं बात पर ?

गोमती — (बारै सू आवती) आई कोनी रीस तो था दिराई है।

धानकी — म्है तनै फेर काईं कैय दियो कै रीस आयगी ?

गोमती — घणा डबूचा मती लेवो। म्हैं स्सो जाणू।

धानकी — काईं जाणै ?

भीमलो — आ बात तो मती कैवो मामीसा। गोमती बाई सू कोई बात छानी

नीं रैवे।

धानकी — पण कोई बात हुई हुवै जद नीं।

भीमलो — क्यू कूड बोलो ? आ बतावो आज दुपारै अठै कोई आया हा काई?

धानकी — अठै भळै कुण आवतो ? कोई नीं आयो।

गोमती — क्यू काना मे डूजा देवो ? म्हनै थे काई अधगैली समझ राखी है? (कीं कड़कती सी) म्हैं पूछू रायसर सू आज कुण आया ?

धानकी — तनै वीं सू काई मतळब ? कोई भलो माणस आवतो तो कीं नै कैंवता भी।

गोमती — सरम करो मा सा कीं सरम करो। घर रै पावणा री काई भलै माणसा मे गिणती नीं हुवै ?

धानकी — भला माणस किस्या हुवै जाणै ? तैं सू तो कीं समझ म्हारै में बेसी है। अै माथे रा केस तावडै में धोळा नीं हुया ?

भीमलो — मामीसा थारा केस तो म्हैं सदा सू धोळा ही देख्या। अबै धोळा में धूड क्यू घतावो ?

धानकी — तू बोलो रैय।

गोमती — लोगा नै जद आ ठा पडसी'कै था पावणा रै सागै घणी माडी बात करी है तो कोई थानै वाहीवाही नीं देवैला। अपूठा थूकैला थारै मूडै।

धानकी — तू बेटी होयर आ बात कैवै ?

गोमती — बेटी कैय'नै क्यू मा रो मान घटावो ?

धानकी — गोमती !

गोमती — गोमती थारे वास्तै मरगी जणैई तो थे घर आयै पावणा नै दुतकारता पूठो बारै गाव भेज दियो। ओ सोचर कै बेटी तो मरगी अबै बारा अठै काई काम? क्यू आहीज बात ही नीं ?

धानकी — तू काई भी कैय ? म्हैं थारी मा हू अर कोई भी मा आपरी बेटी रो बुरो नीं चींतै।

गोमती — तो थानै नाजोगी री बाता कैय'र कुणसो थे म्हारो भलो कर दियो?

धानकी — तो बुरो भी काई करयो ? जिकै मिनख मे रत्ती भी मिनखधारो नीं काई बींरै लारै भेजर म्हे थारी जिदगी नै गैण लगा देता ? जाणबूझर तनै ऊडै दरडै में न्हाखर काई म्हानै कोई खुसी मिळणी ही ?

गोमती — क्यू अलडी बाता करो ? अबे कोई चिनी सी गुडिया कोनी'कै म्हैं कीं समझू नीं हू। म्हनै स्सो पतो है।

धानकी — तनै कीं पतो नी हे। तू जिकी बाता करै बा में थारो नीं थारी ऊमर रा दास है।

गोमती — म्हनै बरगळावो मती।

धूड़जी — (थारै सू आवता करडी आवाज में) छोरी लागै थारो माथो अजकाळै की घणो सूजग्यो।

गोमती — .. । (कोई उथळो नीं देवै)

धानकी — मू मे आवै ज्यू बोल रैयी है।

गोमती — .. । (फेर भी बोली रैवे।)

धूडजी — कोई कैवै नीं जित्तै ही काई ?

धानकी — गुवाड मे भी थानै की बोलगी बतावै।

धूड़जी — जणै हीज तो। ई बठै इत्तो ही कायदो नीं राख्यो कै लोगा रै बीच में बैठये बाप रै सागै की ढग सू बात करी जावै ?

धानकी — म्हनै आ समझ मे नीं आवै कै ई नै इत्ती राफडलीला मचाणै री जरूरत काई ही ?

धूडजी — इत्ती अकल कठै ?

धानकी — अबै बोलै क्यू नी ? इस्यो काई माथे मे सोट मार दियो कै जबाडा चिपकग्या। बतावै क्यू नी काई हुयो ?

धूड़जी — काई नीं हुयो। ई रै भेजै में भणाई–गुणाई रो जिको कीडो बडग्यो बो कणै–कणैई किलबिळावण लाग जावै।

गोमती — ई रो मतळब है थानै म्हारो पढणो–लिखणो दाय नीं आयो ?

धूड़जी — दाय नीं आवतो तो म्हे तनै इसकूल में पढबा खातर थारै मामासा रै अठै सैर नीं भेजता ?

गोमती — बा तो थारी मजबूरी ही। बा दिना में थे गाव रा सिरैपच हा। खुद री बेटी नै नीं पढाता तो लोग मैणो दिया बिना नीं रैंवता।

धूड़जी — इसकूल में तनै काई आहीज सीख मिळी कै मा–बाप रै साम्है दावै ज्यू बोल देणो ?

धानकी — थोडी पोथ्या पढणी काई सीखगी ई रो तो बोळणै रो ढग ही बदळग्यो।

गोमती — भगवान जबान दी है तो चुप क्यू रैवू? बगत पर बोळणो कोई बुरो कोनी।

धूड़जी — (की नरम पडता) तो बोळणै सू म्हे कोई मना करा हा ? पण सावळ तो बोल।

धानकी — सेवट म्हे थारा मा–बाप हा । कोई बैरी कोनी।

गोमती — ओ तो म्हैं भी जाणू। पण म्हारै वास्तै कदै कोई भली री सोची हुवै तो वा बतावो।

धूडजी — भलै री आ सोची कै थारै माथे जिकै भाग भरी ही वो अेकदम लिपळो है।

धानकी — लिपळो फेर किरयोक।

धूडजी — ना वीं में उठणै–बैठणै रो सऊर है अर ना ई री बोली–चाली में चोखो।

धानकी — बीं रै सागै रेवणो नरक भोगणो है। इण सू तो आछो ओ कै कोई भलो मोटियार देख र तनै बीरै लारै कर देवता।

धूडजी — जकै सू तू सोरी सुखी तो रैय राकै।

गोमती — कीं और कैवणो है तो बोल जावो।

धानकी — अबै और कैवणो कीं बाकी बच्यो है? थारै जीं'सा तो सौ बाता री अेक बात कैय दी। आगै तू जाणै।

गोमती — तो जणै अबै म्हारी भी सुणलो। छाटै मू बडी बात कैवणी तो नीं चायू, पण अब कैवू नीं तो म्हारै ही हाण होवणी है।

धानकी — कैय दै कैय दै। मन मे मती राख।

गोमती — पैला तो म्हनै आ बतावो था बा में अेडी काई बात देखी'कै झट लिपळो ही कैंवता हुया?

धूडजी — लिपळै में फेर काई कसर है? बीं मे जे थोडा–घणा ही लख्खण होवता तो खुद रो खेत होवतै थका दूजा रो हाळीपो नीं करतो?

धानकी — अजी जिकै सू खुद रो खेत नीं सभै वो लारै आवण आळी नै काई सभाळसी?

धूडजी — देख बेटी म्हनै तो बीं मे कोई भी तत दीख्यो कोनी।

धानकी — जिको दीखत मे ही सफा डोळबायरो दीखै बींरो पाणी परखणै री कोई जरुरत ही कोनी।

गोमती — थे तो इया बोलो जाणै बानै साम्है बिठाण र बारी सगळी हळचळ सापरतेक देख ली हुवै ?

धानकी — तनै काई म्हारै माथे विसवास कोनी?

गोमती — बिसवास तो जद होवतो जद थे बा सू आम्है–साम्है कोई बात करता।

धानकी — क्यू, म्हारो माथो खराब हो जिको बीं सू बात करता?

धूडजी — आ बळद म्हनै मार क्यू भई? बात तो जणै करता जद बीं में कोई मिनखाचारो देखता। वो तो चैरै सू ही इस्यो लागै हो जाणै जेळ सू माग्योडो कोई कैदी हुवै।

गोमती — दूजै सबदा में थे ओहीज कैवणो चावौ कै थे बानै पावणा जोगा नीं समझया?

धानकी — बींनै बार–बार पावणा कैवण सू थारो मतळब काई है?

गोमती — पावणा नै पावणा केवण रै लारै भी कोई मतळब हुवै काई? पावणा कोई धोया सू नीं धुपै। वा मा'सा वा। कित्ती बेजा बात है ?

घइजतो तो था'ो ओ कै बै जद आया तो बा सू आछी तरिया मिळता या सू बाता करता अर बारो हियो टटोळता 'कै बै किरयाक है? फेर तो कोई बात बणती। थे तो बारै आवता ही गळे ही पडता हुया।

भीमलो — मामासा अठै तो म्हैं गोमती बाई री भीड बोलसू। था बा सू कोई बातचीत ही नीं करी अर कूडो ही कैय दियो कै बा में बोली–चाली रो ही सऊर कोनी। साची बताया था बा सू कोई बात करी ?

धानकी — तनै काई ठा!

भीमलो — पावणा पूठा घिरता खेत रै कनैकर जावै हा 'कै टकरग्या। अठै री सारी बाता बा म्हानै बतळादी।

धानकी — .... । (कोई उथळो दैंवतो नीं बण्यो)

गोमती — .. .. बोलो मा सा। चुप्पी क्यू साध ली ? काई थारै मन में इत्तो ही नीं आयो'कै बै थारी बेटी रा सुहाग हा! काई वे धक्का देय'नै निकाळणजोगा हा?

भीमलो — अेडी दुरगत तो कोई अणजाणै बटावू रै सागै भी नीं करै।

गोमती — अर था ओ भी नीं सोच्यो कै इत्ती दूर सू आयोडा है परायै गाव में बारो थारै सिवाय कोई आपणो नीं है। दूजी ठौड कठै गोता खावता फिरसी ? अर थे बानै टको सो जवाब देय'नै पूठो तगड दियो।

भीमलो — कम सू कम पाणी पीवण रो तो कैंवता।

गोमती — आनै तो बै राकस लागै हा।

धूड़जी — देख क्यू जोर–जोर सू बोलर दुनिया नै सुणावै? म्हानै तो साची–साची बता तू चावै काई है?

गोमती — म्हनै म्हारो घर बसावण दो।

धानकी — मतळब तू सासरै जावणी चावै?

भीमलो — ई में पूछणै री काई बात है?

धूडजी — तो नडा देसा। कोई चोखो दिन आवण दै।

भीमलो — चोखो दिन समझ'र ही तो पावणा आया हा।

धूडजी — पण बै अबै कठै मिळै?

भीमलो — कठै काई खेत में बैठया है। कैवो तो अबार बुला ल्यावू?

धूडजी — देख बेटी तू म्हानै गळत मत समझ। म्हे सदा थारै भलै री सोची। पावणा कैडाक है पैला आ तो देख।

भीमलो — मामोसा आ बात थारी अबै कोई मायनो नीं राखै। पावणा री अठै आवण सू पैला ही गोमती बाई पूरी परीक्स्या ले ली। अर मजै री बात आ कै बै हर तरै सू खरा उतर्‌या।

धुडजी	आ बात तै पैला क्यू नीं बताई?
भीमलो	थ बोलण रो म्हनै कोई मौको ही नीं दियो।
गोमती	पतो नीं थानै ओ वैम कठै सू होयग्यो 'कै पावणा अधगावळा है।
धूड़जी	वैम नीं हुयो म्हानै वीं सेठ बतायो जिकै रै अठै पावणा हाळीपो करै। नीं जणै म्हानै काई ठा पडती ?
गोमती	अर जद ठा करणै रो मौको आयो तो चूकग्या।
धूडजी	आहीज गळती हुई। म्हारै माथे में पावणा रो वोहीज रूप छायो रैयो जिको सेठजी म्हानै बतायो।
गोमती	था सू थे कद मिळया?
धूडजी	जद थारा सासूजी गुजरया अर म्हे बठै मोकायण करावण नै गया।
धानकी	म्हानै जे आ ठाह होंवती कै पावणा म्हारी बेटी रै दाय आयोडा है तो इत्ती राफडलीला ही क्यू होंवती?
भीमलो	अवै तो वैम निकळग्यो ?
धानकी	हा। जणैई तो जी सोरो है।
धूडजी	(भीमलै सू) तू बेगो सो खेत जायर पावणा नै सागै लेयर आ। म्हा दोणा री तरफ सू माफी माग्यै अर कैयै कै बीती बाता बिसार 'नै घरै पधारो।
भीमलो	नेकी अर फेर बूझ–बूझर। अबार जावू अर बैन्दोई सा नै सागै लिवा ल्यावू।
धूडजी	(गोमती सू) अबै तो म्हारी बेटी राजी।
धानकी	अजी बेटी तो सासरै मे ही चोखी लागै।
धूडजी	म्है किस्यो जाणू कोनी ! राध्योडो धान अर खुद री जायी बेटी घणा दिन घर मे नीं खटै।
गोमती	जी सा! म्है भी अदाळ तई अधारै म हीज ही कै म्हारै भविस वास्तै कोई नीं सोचै। पण अबै ठाह पडी कै मा बाप सू बत्ती बेटी रो कोई भी भलो चावणियो नीं है।
धूडजी	साची!
गोमती	हा जी सा ।
धानकी	तू भीमला जावै क्यू नी ? पावणा बठै अेकला बैठया चोखा लागै काई?
भीमलो	ल्यो म्है तो ओ गयो। (कैय नै झट बारै निकळ जावै)
धानकी	तू जे भीमलै सागै इसारो भी कर देती तो बात इत्ती बढती ही कोनी।
धूडजी	खैर अबै गई बात जावण दो। बेटी नै कालै सीख देणी है पैला वींरी त्यारया करो।

धानकी — कालै सीख नीं देवा। पावणा पैली दफा तो आया है। इया वैगा नीं जावण दा। मुकळावै मैं टैम तो लागसी।

धूडजी — आ थे जाणो।

धानकी — (गोमती सू) तू जितै कमला काकी सू माथो गूथवाइया। म्हैं पावणा खातर थोडी लापसी बणा लू।

धूडजी — आछी बात है। थे मा–बेटी काम मे लागो अर म्हैं लारै बाडै मे जावू। (कैय'नै बारै जावण लागै कै मच माथै अधारो घिरया लागै)

□

चोथो दरसाव

(दिन री वेळा। ऊदै रो घर। गोमती झाडू बुहारी करै 'कै अेकाअेक रमतियै सागै सेठ मगळजी माय आ जावै)

गोमती — (हडबडाती सी) काई बात है ? कुण हो थे? बिना बाडो खटखटाया माय कींकर आयग्या ?

रमतियो — अरे ऊदै री बऊ तैं आनै जाण्यो कोनी ? अै सेठ मगळजी है अर म्है आरै मायलै रो माणजो रमतियो।

गोमती — म्हैं काई जाणू ?

रमतियो — थारो बींद ऊदो आरै अठै हीज तो काम करै।

गोमती — हा अबै जाणगी। आछी तरिया जाणगी। हुकम करो। कींकर पधारया?

रमतियो — अै ओ कैवण नै आया है कै आरो मोटो ठाडो घर छोड'र ई टूटयै-फूटयै टापरे मे आण री काई जरुरत पडगी ?

गोमती — टापरो चावै किस्या भी हुवो आपरो हावणो चइजै।

मगळजी — आ भी भला कोई बात हुई। म्हारो घर कोई पराया है ? आगै-लारै म्हारै है कुण ? अेक ऊदो हीज तो है।

गोमती — ओ तो थारो वडप्पन है जिको थे बानै इयै लायक समझ्यो। पण ओ घर भी तो सूनो नीं रैणो चइजै।

रमतियो — काई ई डर सू तो नीं कै सूनै घर में स्याळिया बस जावै ?

गोमती — ओहीज समझलो। रैवणो तो म्हानै अबै अठै ही है।

मगळजी — ई रो मतलब है म्हारै अठै रैवणो थारै दाय नीं आयो।

गोमती — ना-ना इस्यी कोई बात कोनी।

मगळजी — तो फेर अठै रैवण री आ अणूती जिद क्यू ? म्हैं कैवू, दोनू म्हारै अठै ही चालर रैवो।

रमतियो — साची था लोगा रै बठै रैवण सू मामाजी तो राजी हुवैला ही अर ऊदै रै भी बार-बार बठै जावण रो तसियो नीं रैसी।

गोमती — जिका रो जठै काम हुवै बठै बानै जाणो तो पडै ही। कोई रै माथै किरयापर नीं करै।

मगळजी — आ बात तो सही है। पण जद बठै रैवण में कोई आट नीं है तो फेर अठै तकळीफा उठाणै सू काई मतळब ?

रमतियो — बो जद बठै चल्यो जावै अर लारै सू तू अबै अेकली रैवै आ भी

तो चोखी बात कोनी।

मगळजी — जमानो ब्होत खराब है ई वास्तै कैय रैया हा। नीं जणै तो कोई बात नीं।

रमतियो — म्हारी मान मामाजी रै अठै रैवण में ही थारी भलाई है। ऊदो खेत जावै तो पाछै सू फेर थारै अेकली रैवण मे झझट कोनी।

मगळजी — फेर म्हारै होंवतै थका।

रमतियो — अै खुद अेकला भला ही रैय जावो दूजै नै नीं रैवण दै। आ आरी खासीयत है।

मगळजी — अेक सू दो भला। थारै रैवण सू म्हारो मन भी लाग्यो रैसी अर थारो भी। म्हैं जे अेकलो रैवू तो कीं सू बात करू ?

रमतियो — दो जणा होवण सू बगत बीतता भी देर नीं लागै।

मगळजी — इया कैय' कै बाता-बाता में बगत जावण री ठाह ही नीं पडै।

रमतियो — सायती सू सोच लै। थारै अठै रैवण में भलाई है कै वठै रैवण में?

गोमती — म्हारी भलाई री बात म्हैं सोचती रैसू पैला थे थारी भलाई री सोचो।

रमतियो — म्हारै भलाई री म्हे काई सोचा ?

गोमती — ... सोचो ओ'कै अठै सू चुपचाप जावण में थारी भलाई है'कै कीं लदीड खायर जावण मे ?

मगळजी — काई मतळब ?

गोमती — मतळब तो म्हारी ई जूती मे है। ई नै हाथ मे उठावू या थे आपेइ थारलो रस्तो देख लेसो ?

रमतियो — (होळै सी'क) मामाजी दीखै है अठै आपा री दाळ नीं गळणै वाळी। पूठा चल्या चालो। ई मे ही सार है।

मगळजी — पूठा तो चल्या जासा पण ई नै अेक बात समझा दै म्हैं सू राड वधाणी मैंगी पड़ैली।

गोमती — आ तो म्हैं भी जाणू, राड बधाणी कोई सस्तो सौदो कोनी।

मगळजी — तो फेर इत्तो नखरो क्यारो ?

गोमती — नखरो क्यारो ओ जाणणो चावो तो थोडा ठैरो ।

रमतियो — .. ना-ना। म्हानै अबै नीं ठैरणो।

गोमती — तो बोला-बोला सीधा जावो परा। नीं जणै म्हैं कीं बोलगी तो मू लुकावण नै ठौड नीं मिळैली। आ समझ लिया।

रमतियो — मामाजी अबै चालो नीं। अठै घणो जम्यो रैवणो काळ रै काळियै नै न्यूतो देणो है।

मगळजी — न्यूतो तो ई नै म्हैं देवूलो। थोडा क दिन निकळ जावा दैं। (कैंवता रमतियै रै सागै झट बारै जावै परा)

गोमती — (खुदोखुद) अरे थारै जिस्या गादडा म्हैं रोई मे निरा देख्या है। अेक ही दाकळ मे सै भाग छूटता। (दरसका सू) जी सा नै आरै बारै मे ई हरामजादै ही तो भडकायो हो। अबै म्हैं ई रा फूतरा नीं उतार्‌या तो म्हैं म्हारी मा री जायी नीं। लुगाई जात नै काई इत्तो कमजोर समझ लियो कै बा मिनखा रै कैये-कैये ढळ जावै। ई नै

ओजू मरियल गादड्या ही मिळी है। कोई सेरणी सू पालो नीं पड्यो। जणै हीज इत्ती बाता आवै। अबकै कदै साम्हेळो होबा दो। फेर देखसू, ई री आख्या मे मिरच्या घातणी है कै मूढै में जाजरु रो मैल।

(इणी बगत बारै सू ऊदै रा बोल सुणीजे   आज तो म्हूँ घर रै काम में रूद्योडो हू। काले आसू आपरै अठै। रसो काम कर जासू। थे चिन्ता ही ना करो।)

गोमती (खुदोखुद) अै तो आयग्या दीखै अर म्हूँ ओजू सफाई में ही लग्योडी हू। सफाई रो काम भी किस्यो थोडो है ? मुलकाबायरी तो धूड जम्योडी है। तीन दिना तईं तो खख ही नीं जावै।

(बारै सू ऊदो कांधै पर पाणी रो घडो लिया आवै)

गोमती (भाज र घड़ो उतरावती) अबै वा। च्यार घडा पाणी आयग्यो। आपा नै तो खूटै कोनी।

ऊदो दो–अेक घडा फेर ले आवू। गाभा–लत्ता भी तो धोणा है।

गोमती जणै इया करो। म्हनै सागै ले चालो। दोनू अेक–अेक घडो भर ल्यावा।

ऊदो वा । म्हारै सागै चालती चोखी लागसी काई ?

गोमती क्यू ? लुगाई रै काईं कोई खीनखाब लाग्योडा हुवै जिको धणी रै सागै नीं जा सकै ?

ऊदो तू समझै कोनी। गाव मे कीं न कीं कुरबकायदो राखणो पडै।

गोमती या जी। थे भी खूब हो। म्हनै किस्यो ठाह कोनी कै कुरब–कायदो किया राखीजै ? पण थानै ओ नीं पतो कै जमानै रै सागै कुरब कायदा भी बदळ जावै।

ऊदो देख म्हनै तो सिरफ हरफ बाचणा हीज आवै अर तू आगै तईं भणीज्योडी है। अबै इयाकली बाता तू ही जाणै।

गोमती और भी कीं कैवणो बाकी है ?

ऊदो साची बात कैवण मे काई हरज है ? म्हैं तो फकत मगळजी रै फळसै तईं हीज उळझ्यो रैयो अर तैं इसकूल जायनै पोथी पढणी सीख ली।

गोमती पोथी रो ग्यान जद तईं जीवण मे अपणावै नीं बींरो कोई अरथ कोनी।

ऊदो तो अपणावै नीं। आडी कुण दैवै ? फेर अठै तो कोई कैवण वाळो भी कोनी।

गोमती कैवण वाळो क्यू नीं ? पैलीपोत तो थे ही हो। अताळ झट बोल्या'क नी – म्हारै सागै चालती चोखी लागै काई ?

ऊदो इत्ती लाज सरम तो अठै हर कोई राखै।

गोमती पण म्हैं पूछू ई मे हरज काईं है ? परणीजर धणी लुगाई सागै–सागै नीं आवै ?

ऊदो थारीं बाता रो म्हारै कनै तोड कोनी। आगै बोल।

गोमती फेर थारी बिरादरी वाळा टोकैला।

ऊदो बै टोकता रैयो। तू बारी कानी ध्यान ही मती दिये। नीं जणै थारो ग्यान पोथी सू बारै नीं आवैलो।

गोमती जणै ठीक है। थे म्हारै सागै हो तो फेर म्हनै कीं रो ही डर कोनी। ना पाडोस्या रो ना समाज रो।

ऊदो डरणै वाळी बात ही काईं है ? म्हा'रै कोई री चोरी तो करणी नीं अर ना ही कीं रै अठै धाड़ो न्हाखणो जिको बुरो बाजाला।

गोमती अबकै था म्हारै मन री बात कैय दी। म्हानै तो बस कुरीत्या री बेडिया काटणी है जिका रै हेटै कितरा ही लोग दबियोडा–पिसियोडा बैठया है।

ऊदो वा–वा ! थारी आ अेक ही बात लाख रिपिया री है अर म्हारै अेकदम चित्त चढगी। ईं बात पर अेक पाणी रो लोटो झला दे।

गोमती (घड़ै माय सू पाणी रो लोटो भर'नै झलावती) देखो जी आपा नै नुवैसर सू घर बसाणो है। ओ काम कोई सेहज कोनी। आ समझो कै अेक–अेक जिनस रै बदोबरत करणै मैं ताण आसी।

ऊदो तो काईं करणो चइजै ?

गोमती ओहीज तो सोचणो है। अच्छा आ बतायो सेठजी रै अठै थे कित्ता बरसा सू हाळीपो करता रैया ?

ऊदो होयग्या होवैला कोई तीनेक बरस।

गोमती बठै काईं काम करो ?

ऊदो घर में जिको भी हुवै।

गोमती खेत कुण समाळै ?

ऊदो बो भी म्हनै ही सभाळणो पडै।

गोमती अर पगार कित्ती देवै ?

ऊदो आज तईं तो कदै दी कोनी। हा कैवै जरूर है कै म्हारी पगार रा पचास रिपिया हर महीनै म्हारै खाते में जमा हो जावै।

गोमती *पण नगद हाथ मे कदै नीं झलाया ?*

ऊदो नीं तो।

गोमती इण रो मतलब है ब्याज मिळार तीनेक हजार रै नेडैगेडै रिपिया बारै कनै जमा है।

ऊदो ब्याज तो वै काईं देवैला ?

गोमती क्यू नीं देवैला ? जमापूजी पर ब्याज तो लागै ही।

ऊदो आ तू जाणै।

गोमती थे चिन्ता ही ना करो। म्हैं आपैई वसूल लेसू।

ऊदो कींकर ?

गोमती बारै घरै जाय'नै। मुकरै तो जाणै है नीं। सीधी आगळी सू घी नीं निकळै तो थोडी टेढी कर'नै निकाळसा। पसीनै सू कमायोडी पगार इया किया छोड देवा?

ऊदो	छोड़णै री तो बात कोनी। पण सेठ मगळजी आदमी ब्होत लीचड है।
गोमती	लीचड़ नै कीचड म न्हाखणो म्हनै आवै है। म्हारै साम्है बारो लीचडपणो नीं चालै। बा ज्यादा नानुकर करी तो फेर म्हे भी म्हारा पैंतरा दिखाया बिना नीं रैवाला।
ऊदो	लागै तू तो ब्होत लड़ोकड़ी है।
गोमती	म्हैं काई हू, थे देखता चालो। हा अबै आ बतावो आपणै खेत रा काई हाल है ?
ऊदो	आपणै खेत री भी बुवाई हर साल हुवै।
गोमती	कुण करावै ?
ऊदो	करावै तो सेठजी ही।
गोमती	जणै धान भी बारै कोठार मे ही जातो हुसी ?
ऊदो	बो तो बठै ही जावै।
गोमती	बींरै सीर री पाती?
ऊदो	बा भी बैहीज राखै।
गोमती	क्यू ? थानै क्यू नीं देवै ?
ऊदो	ओ तो बै जाणै। पण देता भी तो म्हैं राखतो कठै ?
गोमती	ओ टापरो फेर क्यारै वास्तै है ?
ऊदो	अठै तो लारलै तीन बरसा मे म्हारो ओकर भी आणो नीं हुयो।
गोमती	मानू। ओकला हा। कोनी आणो हुयो। पण ई रो ओ तो मतलब कोनी कै बै थारी पाती रो धान भी हडप जावै ?
ऊदो	ओ तो बा सू पूछ्या बेरो चालसी।
गोमती	हुऽऽ! ओकर ओ टापरो साफ हो जावै अठै आपा की रैवण लाग जावा अर गाडी थोडी चीला आ जावै फेर बानै झिझोरसा।
ऊदो	हा। ओजू तो चूल्हो ही नीं सुळगायो।
गोमती	(हासती) क्यू भूख लागगी काई?
ऊदो	अबै तो लागणी ही है।
गोमती	जणै ओ हाथ रो काम निपटार पैला रसोई में ही लागू। अबार तो रसो की सागै लाई हू।
ऊदो	काई बणासी ?
गोमती	कैवा ज्यू । थाडो सीरो बणा दू ?
ऊदो	ना—ना ।
गोमती	तो लापसी।
ऊदो	हा आ हुई नीं बात।
गोमती	सुभ टाकडै लापसी सू बत्ती की नीं है।
ऊदो	पण बा मिळसी कणै ?
गोमती	बस रसोई चढावू, जित्ती देर समझो।
ऊदो	ई मे घटो ओक तो पक्को लागैलो।

गोमती	क्यू, जीमर कठैई जाणो है काई ?
ऊदो	हा। बाईसा रै अठै अेकर हो आवतो।
गोमती	तो जणै पैला बठीनै हो आवो। पूठा आसो जित्तै रसोई त्यार है।
ऊदो	फेर तो बैगो सो बठीनै रो अेक चक्कर लगा आवू। (कैय नै बारै जावै परो)
	(गोमती बैगी बैगी बुहारी करबा लागै 'कै मच पर अधियारो घिरतो जावै)

□

पाचवों दरसाव

(सिझया री बेळा। सोहनलाल सिरैपच रै घर रै आगै री चौकी। सोहनलाल बैठ्यो छापो देखै। उळट पुळट'र कीं बाचणो चावै पण पार नीं पड़ै। ऊभो होयर जोर जोर सू आसियै नै हेलो पाडै।)

सोहनलाल	(हेलो पाड़तो) अरे आसिया ऽऽ !! ओ आसिया।
आसियो	(आपरै घर सू) के है काका ?
सोहनलाल	अरे अेकर अठीनै आये तो।
आसियो	कोई खास काम है के ?
सोहनलाल	खास काम है जणैई तो।
आसियो	आयो।
सोहनलाल	(खुदोखुद) मोटा–मोटा आखर तो फेर भी बाचलू। अै चिनी–चिन्नी सी लिकाटया तो म्हारै ओळखणै मे ही नीं आवै। पतो नीं लोग किया फटानफट बाचता ही हुवै। म्हैं तो अेक लैण बाचू जिकै में ही अध घटो लाग जावै।
आसियो	(घर सू आवतो) कींकर याद कर्‌यो ?
सोहनलाल	कींकर काई भाईडा घडी'क पैला लादूजी रो बेटो सैर सू लाय'नै ओ अेक छापो झलायग्यो। कैयग्यो ई मे पचायता रै नुवै चुनावा री खबर है। म्है तो ओ सारो उळट–पुळट'र देख लियो म्हनै तो आ खबर कठै निगै नीं आई।
आसियो	ल्यावो म्हनै दिखावो दिखाण। आ तो आपा रै वास्तै व्होत खास खबर है।
सोहनलाल	जणैई तो। (छापो आसियै नै झलावै) तू तो छठी तई भणीज्योडो है। जो दिखाण कठै काई छपी है?
आसियो	(छापै रो अेक अेक पानो पळटर ध्यान सू देखतो) आ रैयी काका।
सोहनलाल	बाच–बाच । काई लिख्यो है ?
आसियो	(सरसरी निगै सू बाचतो) लिख्यो है अगलै महीनै राज री सगळी पचायता रै पचा अर सिरैपचा रा चुनाव होवैला।
सोहनलाल	होवैला – जाणग्यो। आगै काई लिख्यो है ओ देख।
आसियो	(बाचतो बाचतो) थोडा ठैरो। (थोडी क ताळ में बाचर) ओ तो

रगडो होयग्यो काका।

सोहनलाल रगडो फेर काई होयग्यो ?

आसियो थे तो अबकै सिरैपच वास्तै खडा नीं हो सको।

सोहनलाल क्यू भई ! म्हनै तो ओजू दस बरस ही नी हुया।

आसियो इण सू कोई मतळब कोनी।

सोहनलाल क्यू ? मतळब क्यू नीं ? लोग तो बीस बीस बरसा सू कुरसी पर जम्या बैठया है।

आसियो थे जिकी सोचो वा बात कोनी।

सोहनलाल तो फेर काई है ?

आसियो अजी आपणै अठै रायसर मे अबकी दफा कोई लुगाई ही सिरैपच बण सकैली।

सोहनलाल क्यू ? म्हे कठै मरग्या काई ?

आसियो अजी लुगाया नै भी तो सिरैपच बणबा रो मौका मिळणो चइजै।

सोहनलाल वा ! आ कोई बात हुई !

आसियो सरकारी निरणै रै आगै थे– म्हे काई कर सका ?

सोहनलाल म्है पूछू – दूजी पचायत्ता में कोई लुगाया कोनी काई ? आ हीज पचायत मिळी काई सरकार नै !

आसियो अै तो ऊची कुरस्या पर बैठण वाळा जाणै। छापै मे तो आज री खास खबर आहीज है।

सोहनलाल इण रो मतळब ओ हुयो कै अठै अबै लुगाया रो राज चालसी।

आसियो चालसी जिको तो चालसी। हा आ साच है कै लुगाई जात सू सिरैपची रो काम निभणो दोरो है।

सोहनलाल जिक्या नै कक्को ही माडणो नीं आवै बै फाइला सू काई माथो फोडसी?

आसियो हो सकै है सिरैपच बणबा रै बाद भणाई गुणाई सीख जावै।

सोहनलाल करम सीख जावै। दस बरस तो म्हनै होयग्या आखरा सू माथाफोडी करता ओजू भी तीजी किलास री पोथी भी पढणै मे नी आवै।

आसियो थारी बात और है। थानै दूजे कामा सू ही फुरसत कोनी। पढो कठै सू ?

सोहनलाल तो लुगाया किस्यी आपरै घर मे बेली रैवै ? गिरस्थी मे सौ काम हुवै।

आसियो फेर भी बै तो कोई न कोई टैम निकाळर आखर ओळखणा तो सीख ही जासी।

सोहनलाल इण सू काई होसी! अकल तो बाहीज रैसी जिकी बारी अेडी में हुवै। भेजो तो खाली रो खाली। काम काई धूड करसी ?

आसियो बिया भी आपणै गाव मे पढी–लिखी लुगाया भी है किस्यी ?

सोहनलाल बस अेक ठाकरा रै बेटै री बऊ जरुर है जिकी पढी लिखी भी है अर हुसियार भी।

आसियो	पण वै तो सैर में जा बस्या।
सोहनलाल	वाकी तो कुण है ? या फेर थारी काकी है ।
आसियो	वानै काई आवै ?
सोहनलाल	कूडो–साचो आपरो नाव लिखणो तो आवै हीज है। बाकी तो रसै ठठै मींडी ठोठ है।
घमजी	(आवता आवता) कुण काई ठोठ है ? म्है भी तो जाणू।
सोहनलाल	आवो–आवो घमजी। बिराजो।
आसियो	बात लुगाया री चालै ओ SS। ईं छापै मे समाचार छप्या है 'कै अगलै महीनै पचायता रा चुनावा होणा है.. ।
घमजी	भलै। जणै तो आपा री पचायती गई।
सोहनलाल	वा गई जिकी तो गई। असली वात सुणो। आपणै अठै अबकलै सिरैपच री कुरसी पर कोई लुगाई ही वैठैली।
घमजी	क्यू ? ओ कोई जरुरी है ?
सोहनलाल	जरुरी है इणी वास्तै तो ।
घमजी	..कींकर ?
आसियो	मिनख–लुगाई रै भेद सू परै हट'र सरकार चावै कै कीं दस–बीस सैंकडा लुगाया नै भी सिरैपच बणबारो मौको मिलणो चइजै। इण वास्तै ठावै–ठावै गावा मे कठै दूळी जात आळा नै तो कठैई लुगाया नै सिरैपच रो पद देवण री ठाण राखी है।
घमजी	अरे लाडी सिरैपच री कुरसी पर तो मिनख ही बैठया ओपता लागै।
सोहनलाल	पण सरकार तो लुगाई जात नै बरोबरी रो दरजो देवणी चावै नीं।
घमजी	तो काई सिरैपच बणबा सू बा मिनख रै बरोबर हो जासी ?
सोहनलाल	हुवो–ना हुवो आ सरकार जाणै।
आसियो	सरकार जिके गावा मे लुगाया नै सिरैपच बणाणी चावै बीं लिस्ट में आपणो गाव रायसर भी है।
घमजी	इण रो मतलब ।
सोहनलाल	सरकार आपरी तरफ सू ओ निरणै ले लियो है कै आपणै अठै। सिरैपच री कुरसी पर कोई लुगाई ही बैठैली।
आसियो	जणैई तो।
सोहनलाल	अब थे बतावो घमजी सिरैपच वास्तै अठै कुणसी लुगाई है जिकी फिट बैठै।
आसियो	कीं थोडी पढी–लिखी भी होवणी चइजै।
सोहनलाल	आपणै अठै लुगाया नै पढावै ही कुण है ?
घमजी	कोई नीं पढावै तो आ दूजी बात है। सरकार री तरफ सू तो इसकूल खोल राखी है। छोरया री अेकदम न्यारी।
सोहनलाल	इसकूल खोलवा सू काई हुवै ओ घमजी ? पढबा नै जावण वाळी छोरया कित्ती है आ देखो नीं।

घमजी	ओ तो थानै पतो होवणो चइजै।
सोहनलाल	पतो है जद ही तो कैवू। अजी आ अलडै कामा खातर कीं नै फुरसत है?
आसियो	पढाई नै थे अलडै कामा में गिणो जद तो काका हो चूकी वात।
घमजी	थानै तो कम सू कम आ बात नीं कैवणी चइजै।
सोहनलाल	साची बात कैवण में मेणो कोनी। बाइ--बेटी जद आपरे घर में काम सू ही नीं निवडै पढवा नै काई खाक जासी ?
आसियो	फुळ मिळार कैवण रो मतलब ओहीज है 'कै सिरैपच वास्ते कुणसी लुगाई ने खडी करा ?
सोहनलाल	पढी--लिखी तो कोई दीखै ही कोनी।
आसियो	लेय देय नै अेक नाव है अर बो है काकी रो।
घमजी	इया तो अेक नाव और भी है।
आसियो	तो बतावो नीं।
घमजी	ऊदै री लुगाई गोमती रो। बा दसवीं सू बेसी पढियोडी है।
आसियो	हा ऽऽ।। ओ नाव थे चोखो याद दिरायो। म्हें तो भूल ही ग्यो।
सोहनलाल	ओ तो ठीक हैं पण ऊदै मे अकल कोनी नीं। आ कामा में बिना धणी रै कोई लुगाई अेक पाडो भी नी हाल सकै।
आसियो	आ तो पक्की बात है। लुगाई री पीठ पर बींरै धणी रो हाथ तो होणो ही चइजै।
सोहनलाल	बात कडवी है पण है साची।
आसियो	सिरैपच री कुरसी ही अेडी है बीं पर बैठण वाळै नै हर बात री चोकसी राखणी पडै। गाव मे रात नै कोई हादसो हो जावै तो बींनै तो बठै तुरत पूगणो ही पडै।
सोहनलाल	बीं वगत जे माटियार तकडो हुवै तो कोई काम वास्तै दूजा रो मू नीं ताकणो पडै।
घमजी	तो थे काई समझो ऊदो जावक ही डोळबायरो है या गेलो है?
सोहनलाल	गैलो तो नीं पण वा समझादारी भी कोनी जिकी ई ऊमर में होणी चइजै।
आसियो	ना काका इस्यी बात तो कोनी। समझदार नीं होंवतो तो पढी--लिखी लुगाई नै अब तई परोटतो कींकर ?
सोहनलाल	आ वात मत कैय। समझदार तो बा है जिकी ऊदै नै परोट रैयी है।
घमजी	ना थे साचा हो ना ओ साचो। असली बात तो आ है कै वै बींद--बऊ दोनू ही समझदार है।
आसियो	थारा कैवण रो मतलब हे ऊदो अब कोई नासमझ कोनी ?
घमजी	नासमझ हो कद ? ओ तो सेठ मगळजी जिस्सै लोगा ढिंढोरो पीट राख्यो हो'कै ऊदो अधगैलो है आडूलड्ड है। आपरै कामा में बा बींनै इस्यो उळझायै राख्यो'कै दूजी बात सोचबा रो त्यायी नै कदै मौको ही नी मिळ्यो।

आसियो — आ तो म्हैं भी कैवूं। बा तो ऊदै नै कीं सू मिळवा भी नीं दियो।

सोहनलाल — मानी थारी बात। ऊदो अब स्याणो है समझणो है। पण है तो अणपढ ही।

आसियो — इस्यो कोई अणपढ नीं। आखर बाचणा तो बींनै सरू सू ही आता हा।

घमजी — लुगाई री देखादेखी अबै तो वो पोथी बाचणो भी सीखग्यो।

सोहनलाल — पोथी बाचणै सू काई हुसियारी नीं आ जावै ?

घमजी — हुसियारी पोथ्या बाचणै सू नीं आवै तो कोरी बाता सू भी नीं आवै। हुस्यिारी आवै ईमानदारी अर सजीदगी रै सागै काम करणै सू।

सोहनलाल — जणै तो म्हारी घरआळी हुसियारी मे स्गै सू वत्ती है। सिरैपची वास्तै वा क्यू नीं खडी हो सकै ?

घमजी — तो खडी करो नीं।

सोहनलाल — कराला ही । म्हैं बींरो हक क्यू मारा ?

घमजी — कुण कैवै कै थे बींरो हक मारो। इत्तो ही तो है दो जण्या खडी हो जासी हुवो।

आसियो — म्हारै तो को जची नीं। गाव रो भलो ई मे ही है कै अेक जणी नै खडी करी जावै।

सोहनलाल — नीं जणै ?

आसियो — दूजे गाव रा लोग आ सोचसी कै अठै सपत कोनी।

घमजी — तो करा काईं ? गाव मे ऊदै री बीनणी स्गै सू बेसी पढियोडी है। बीं नै जे खडी नीं करा तो चोखी बात कोनी। अठीनै आरी घरआळी रो हक खोसणो भी बुरो है।

सोहनलाल — अजी थे बीच मे आयर ओ नुवो फाडो नीं घालता तो कोई टटो ही नीं हो।

आसियो — नुवो फाडो !

सोहनलाल — ऊदै री लुगाई नै बीच मे ल्यार।

घमजी — सोहनलालजी फाडो म्हैं नीं था फसायो है। भिडतै ही आपरी घरआळी रो नाव उछाळर था बात नै बस आपरै कानी मोड लीन्हीं।

आसियो — बात तो घमजी री साची है। हालतोडी चालू पचायत भग नीं हुई। चइजतो तो ओ कै सगळै पचा नै भेळा करता अर फेर इण बाबत कोई पैसलो करता।

सोहनलाल — अरे छोड ई बाता नैं। पचा म सिरेपच अबार म्हैं हू। नुवै सिरैपच वास्तै म्हैं कींरो भी नाव सुझावू, म्हनै कोई रोक नीं सकै।

घमजी — आ कोई बात नीं हुई।

सोहनलाल — तो इत्ता बरस म्हैं काईं कारी भाड ही झोंकी ? कोई काम नीं करायो गाव मे ? काईं म्हैं इत्ता भी फायदो नीं उठा सकू ?

घमजी — उठावा—उठावो। अब तईं कदै कोई घाटो नीं उठायो तो अब फायदो क्यू नीं उठावो ! अेडा मोका बार—बार नीं आवै।

सोहनलाल	थे जिकी मीट मे बोल रैया हो म्हैं स्सो रामझू। आ भी जाणू वै ऊदै री बळ रो थे क्यू पख ले रैया हो ?
घमजी	जद जाणो हो तो बतावो क्यू नी ? सको बयारो ?
सोहनलाल	इया बता दू किस्यो भोळो हू ? की बाता अेडी भी हुवै जिकी बताई नीं जावै।
आसियो	(चुटकी लेयतो) क्यू, बतावण सू कोई रा पोत चवडे आ जावै काई?
घमजी	आनै काई पूछै ? म्हन पूछ। जिका हमेसा थूक रा थेपा लगावण रो ही काम करयो वै असली बात कदै बता ही नीं सकै।
सोहनलाल	म्हनै घणी रीस मती अणायो।
ऊदो	(अेकाअेक आयनै) रीस आयगी तो बावोरा सगळा नै गाव छोडणै रो हुकम दे देवैला।
घमजी	ऊदा तू अठै क्यू आयग्यो ? अै तो थारै माथै इया ही खार खाया बैठया है।
सोहनलाल	थारो कोरो भडकाणै रो ही काम है कै कोई और भी धधो हे ?
घमजी	ई मे भडकाणै री काई बात है ? थे अताळ ई री बात नै लयर रातापीळा नीं हुया हो तो बोलो।
आसियो	अजी बात नै ह जठै ही ढाबो। क्यू बेमतळब री राड बधावो ?
ऊदो	आरू भाई राड तो बठै बधै जठै दोनू कानी अेक-दूजै री काट करणै री होड मची हुवै।
आसियो	तू कैवै जिकी बात तो ठीक ह पण जद जीभ री लगाम ढीली पड जावै तो बा बळी लडाया री लाडी बणती देर नीं लगाव।
घमजी	लडाया मे फर लाडू तो बटणै सू रैया ?
आसियो	छेकड लडै जिका रा माथा भी लाल हुवै।
सोहनलाल	क्यू अणूती बाता करो ? म्हनै अर घमजी नै काई थे लडोकडा समझ लिया?
घमजी	सोहनलालजी सही कैवै। म्हा लागा री नोकझोक तो सदा सू इया ही चालती रैव। पण म्हे कदै मन मे कडवारा नी लाया।
सोहनलाल	अबै तो ऊदा तू आ बता सेठजी सागै खेत री जिकी झोडझपट चालै ही बा मिटी क नीं ?
ऊदो	कठै मिटी। इया वै सहज ही मे राजी होवण वाळा है काई ?
घमजी	वै कैवै काई है ?
ऊदो	कैवै-कागदा में म्हारै नाव रो कोई खेत ही कोनी।
सोहनलाल	बीं वगत ही झट उथळो दियो होंवतो कै म्हारै नाव तो कोनी म्हारै बाप रै नाव तो है।
आसियो	सेठजी ब्होत धाघ आदमी है।
घमजी	लाता रा भूत बाता सू नीं मानै।
आसियो	नीं जणै बै कोई रै कैय नै धारै ही कोनी।
घमजी	धारै तो काई कोनी। सेर नै कोइ सवा सर नीं मिळयो। इ री धीनणी

	कदै जे बारै सागै मडगी तो बै कोई सूनी गळी में भाजता ही निजर आवैला।
ऊदो	अजी म्हे सोचा क्यू की रा बैर घाता। मिळजुळर रैवण में ही सगळा रो हित है। क्यू बाबोसा ?
सोहनलाल	देख लाड़ी थारै कैयै री म्हैं काट नीं करू पण मेळमिळाप तो बारै सागै राख्यो जावै जिका दूजा नै भी आपरो समझै। सेठजी ठैर्या पइसै रा पुजारी। बा नै भला थारै–म्हारै सू काई मतलब ?
घमजी	खैर आ बाता रो तो कोई छेडो कोनी। ऊदा तू अेक काम कर। पगडै थारी बऊ नै म्हारै अठै भेज्ये।
ऊदो	बा तो आज भी बाईजी सू मिळवा नै थारै अठै हीज गई है।
घमजी	जणै बा। बीं सू कोई बात पूछणी है बठै ही पूछ लेसू।
सोहनलाल	क्यू, जिकी बात पूछणी है बा ई रा ही पूछलो नीं।
ऊदो	बात काई है ?
आसियो	बात आ है रै भाया कै थारी बऊ नै अबकी दफा म्हे सिरैपच रो चुनाव लडवाणो चावा।
ऊदो	क्यू, बाबोसा रै होंवतै थका दूजै नै सिरैपच बनावण री आ काई सूझी?
आसियो	अे तो अब खडा नीं हो सकै।
ऊदो	क्यू ?
आसियो	सरकार रा हुकम है। अबकै अठै रो सिरैपच कोई लुगाई ही बणैली।
ऊदो	तो लुगाया रो कुणसो घाटो है ? कोई बूढी–बडेरी नै जिकी समझदार हुवै बणा दो। अळगा ना जावो माय बडियाजी ही बैठ्या है।
सोहनलाल	पण बींनै अे लोग चावै जद नीं।
ऊदो	क्यू ? बा मे काई कमी है ? बाबोसा रै सागै रैय नै बा की सीख्यो तो है। दूज्या नै तो ओ भी पतो नीं कै टक्कै री टाग किस्यी हुवै?
सोहनलाल	चार आख्या वाळा री चतराई नै दो आख्या वाळा तो फेर समझ ही नीं सकैला आ सोच लिया।
आसियो	साची पूछो तो सिरैपच बाहीज होणी चइजै जिकै म थोडी–घणी चतराई हुवै।
ऊदो	चतराई मे तो बडियाजी भी घाट कोनी।
सोहनलाल	ना भई। बा तो अेकदम सीधी सादी है। बींरी गिणती चतर लुगाया मे कोनी आवै।
ऊदो	पण बै हिम्मतवाळा तो है।
घमजी	हुसियारी बिना हिम्मत रो कोई अरथ नीं रैवै।
ऊदो	पण आपा ई बात नै लेयर अबार सू ही क्यू झिकाळ करा ?
आसियो	आपा नै तो आ बात पचा पर न्हाख देणी चइजै। बै जाणै बारो काम।

ऊदो — ओ तो स्सै सू आछो। क्यू बाबोसा ?

सोहनलाल — म्हनै तो ईं बाबत कीं नीं कैणो।

(कैय नै उठर माय चल्यो जावै)

आसियो, घमजी, ऊदो — (अेकैसागै) अजी सुणो तो सरी।

सोहनलाल — (माय सू ही) म्हनै कीं री नीं सुणणी।

ऊदो — (जोर सू) अजी बडियाजी नै सागैं लेयर अेकर बारे तो आवो।

घमजी — (जोर सू) क्यू ? बाखडी अर बैडकी रो काईं मेळ नीं कराणो।

सोहनलाल — (माय सू ही) थानै बीच मे कूदणै री जरूरत नीं है।

आसियो — (जोर सू) अजी बीच में कोई नीं कूदे। पण बैडकी नै न्यूतो देयर बाखडी रो माजणो क्यू भुडावो ? बीरा तो सींग ही लाबा–तीखा है। कठै काकी नै हेटै न्हाख दी जद?

सोहनलाल — (माय सू ही) अरे काकी रा जेठूता तू दोरो क्यू हुवै ? घमजी रै सागै तू भी घर रो रस्तो देख।

घमजी — हालो–हालो। सोहनलालजी मे घणी सैणसगती कोनी।

ऊदो — चोखो–चोखो। गाठ रो भरम बण्यो रैवे जितै ही ठीक है।

(कैय नै तीनू हसता हसता जावण लागै कै मच पर पडदो हेटै गिरतो जावै।)

❑

छठो दरसाव

(दिन रो वगत। मगळजी री वैठक। तखत पर वैठया मगळजी रै मूडे माथै अर हाथा पर जगै जगै पाट्या वाध्योडी है।)

मगळजी — (पीड सू टसकता खुदोखुद) बळी म्हारै सागै इस्यी घात करैली आ जे म्हनै पैला ठा होवती तो म्हैं वठै वाळण नै जावतो। जद वीं म्हारो हाथ मरोडयो तो नागडैखादो रमतियो भी साथ छोडग्यो। कित्तो चाव सू गयो कै कियान–कियानकर अेकर बींनै राजी करणो है। पण वा तो वागडबिल्ली ज्यू जावतै ही इस्यी झपटी कै सारो मूडो नोच काढयो। मायली वात होठा पर लाय ही नीं सक्यो कै उण सू पैला म्हारी तो बोलती ही वद कर दी। इस्यी ततैया मिरची तो म्हैं म्हारी पूरी ऊमर मे ही नीं देखी। जबरी नागी है। सीधै मू तो वात ही नीं करे। भगवान बचावै इस्यी नागण सू।

रमतियो — (वारै सू आवतो) आल्यो वैदजी री दवा। दिनूगै–सिझ्या अेक–अेक पूडी पाणी रै सागे गिटणी है। (कैय नै हाथ में पूडया थमावै)

मगळजी — अै तो अवै लेवणी हीज है पण म्हनै आ वता तू उण टैम होळै सी खिसक्यो क्यू ?

रमतियो — तो म्हैं वठे ऊभो काईं करतो ? थे वीं सू ज्यू ही मीठी वाता करवा लागा कै म्ह वारै निकळ आयो।

मगळजी — आयो–रै–आयो। वीं तो बळी वात टोरतै ही इस्यी रगदड मचाई कै म्हनै सभळणै रो मौको ही नीं दियो अर मार भचाभच–मार भचाभच सारो डील जरकाय काढयो।

रमतियो — थे बोलता नीं तो म्हनै ठाह ही नीं पडती कै थानै वीं बोलण जोगा ही नीं छोडया।

मगळजी — ओ तो चोखो हुयो तू बीच मे आयग्यो। नीं जणै वा तो म्हनै मार ही काढती। मूसळ हाथ मे लेय नै इस्यी लारै लागी कै हाडिया स्रै ताड न्हाख्या।

रमतियो — भगवान भली करी कै कपाळ किरिया सू वचग्या नी जणै ।

मगळजी — .. वैलो रैय। क्यू घाव मे गोभो घालै। उण वगत काईं गुजरी आ तो म्हैं ही जाणू।

रमतियो — ओ तो थारो चैरो ही वता रैयो है।

मगळजी — अवै तो वा कठै मिळ जावै तो म्हें वींरै साम्हैं ही नीं देखू।

रमतियो — अजी इस्यी या कुणसी तीरामार खा है जिको इत्ता डरो ?

मगळजी — अरे तू ईं वैम में मत रैये के बा कोई निबळी है ?

(इणी वगत गोमती बारै सू आय नै वोली वोली चोखट माथे ऊभी रैय जावै अर दोना री वाता सुणे)

रमतियो — अजी रैवा दो। कदै म्हारै धक्कै चढगी तो दिखणादी रोई म ले जाय'नै कठै इस्यी पटकसू कै घणा दिन याद राखसी।

मगळजी — दिखणादी रोई में इस्यो काईं है ?

रमतियो — थे वठीनै कदै गया कोनी जद थानै काईं ठा ? बठै कित्तो ही जोर–जोर सू रोवो–कूको दूर–दूर तईं कोई सुणणियो ही कोनी।

मगळजी — ना–ना इस्यो काम मत कर्‌ये।

रमतियो — अजी थारै सागै जिकी बीं घोट करी है बा भूल नीं सकू। म्हैं बींनै अबै छोडण वाळो कोनी। म्हारै अठै लाय लाग रैयी है। जवानी रा रारा झाग मेट नीं काढया तो म्हारो नाय रमतियो नीं। हालताणी बीं म्हनै देख्यो नीं है।।

मगळजी — अेक बात तो म्हैं भी देखी बींरी जवानी तो साची कपडा माय सू झबझब करै ही।

रमतियो — जणैई तो म्हैं थानै अेकर पैला भी कैयो कै अेडी बीजळी री तरिया चमकणवाळी नै कोई कित्तो ही वाधर राखो बींरो पळको तो आजू–बाजू पडया विना रैय ही नीं सकै।

मगळजी — पण म्हनै इस्यी भी नीं लागी कै बीं कोई घाट–घाट रो पाणी पी राख्यो हुवै। अेडी बात होवती तो म्हनै देख र अेकाअेक यू चिमकती कोनी।

रमतियो — थे काईं भी कैवो म्हारो मन कैवै कै बा कोई चालू फिडकली है।

गोमती — (माय आवती) जणैई तो म्है फेरू थाने कनै आई हू। विसेसकर ईं रमतियै सू मिळवा नै।

रमतियो — (धूजतो धूजतो) म्हा म्हारै सू काईं काम है ?

गोमती — काम क्यू नी ? स्सै सू मोटो काम है दिखणादी रोई चालया रो। बारै टोडियो ऊभो है। तू अर म्हे दोनू चाला। क्यू काईं जची ?

रमतियो — रो रोई वाळी बात आ कठै सू आयगी ?

गोमती — भोळो मती बण। म्हैं बारै ऊभी–ऊभी स्सो सुण चुकी।

रमतियो — त.. तनै कोई वैम हुयो है।

गोमती — *ओहीज समझलै। अरे अेडा मौका बार–बार नीं आवै। सेठजी मूडै* पर आई खरूचा नै पपोळै जित्ते आपा बठीनै हो आवा। क्यू सेठजी?

मगळजी — म्है.. म्हं तो इण बावत मे काईं बोलू ?

गोमती — हा ऽऽ।। थे काईं बोलसो ? थे तो बोलण जोगा रैया भी तो कोनी।

(मगळजी तखत पर बेठयो बैठ्यो हाथ जोड़र मू सू माफी मागण खातर की बोलणो चावे पण बोल नीं सकै।)

गोमती	वा–वा ! थे इया गळागळा मती होवो। गई बाता नै बिसर जावो। अजी म्हैं तो थारी बेटी बरोबर हू। क्यू रे रमतिया ?
रमतियो	म्हैं तो आरो चाकर हू। कालै आ भूल सू सिलाजीत री अेक फाकी ले लीन्ही जिण रै कारण थारै अठै इत्ती राफड़लीला हुई। आरी तरफ सू म्हैं हाथ जोड नै माफी मागू।
गोमती	तने तो माफी मागण रो हक ही कोनी। तू तो अेकर बोला रैय। अताळ म्हैं आरै कनै अेक काम सू आई हू। पैला बो हावण दै।
मगळजी	बोल–बोल म्हा सू जो भी काम है झट कैय दै।
गोमती	टाबर जाणर म्हनै म्हारै खेत रा कागज झला दो। था सू बस आहीज अरदास है।
मगळजी	क्यू नीं ? (डरूफरू से हुयोड़ो रमतियै नै कनै बुलार बी रै काना मे कीं कैवै)
रमतियो	म्हें अबार लाय नै दू। (कैय नै माय जावै परो)
गोमती	न्याल करसी। (मगळजी सू) अबै दूजी अरदास आ'कै बा थारै अठै तीन साल तई हाळीपो करयो नै घर रो सारो खोरसो भी। करयोक नी ?
मगळजी	करयो। बरोबर करयो।
गोमती	पण था बानै पगार रो अेक टक्को भी आख्या नीं दिखायो।
मगळजी	(हा मे हा मिळातो) कोनी दिखायो।
गोमती	आ तीन साला म बारी जित्ती भी पगार वणै सूद समेत चुपचाप लाय न म्हारै हाथ म झला दो। नीं जणै म्हनै रीस आयगी तो ।
मगळजी	ना–ना बऊराणी आ रीस तनै सोभा नीं देवै। साची बात तो आ है कै पगार बठै दी जावै जठै कोई परायो काम करतो हुवै। ऊदो तो म्हार अठ टाबर दई रैयो।
गोमती	तो काई टावरा नै आपरो घर बसावण सारू कीं नीं चइजै ?
मगळजी	क्यू नीं चइजै ?
गोमती	जणै ?
मगळजी	पला म्हारी बात तो सुण। तै जिकी घर बसावण री बात करी इण सू म्हैं तो व्होत खुस हू। चावे मदद रै रूप में मान लै चावै ऊदै री पगार रै रूप मे म्हैं तनै पाच हजार रिपिया रोकड़ी देवू, अबै तो राजी।
गोमती	म्हनै मदद नीं पगार चइजै।
मगळजी	तो ईं नै पगार समझले। अरी बावळी म्ह तो उण दिन ही कैयोकै म्हारै आगै–लारै ऊदै रै सिवाय और कोई कोनी।
गोमती	थे चिन्ता ही ना करो। म्हे थासू कोई अळगा नीं हा।
मगळजी	ओ ता म्हनै बिसवास है।
	(इणी बगत माय सू रमतियो कागद लाय नै गोमती नै झलावै)
रमतियो	अहीज है नीं ?

गोमती — **(चोखी तरिया देख र)** हा अेहीज है।

मगळजी — रमतिया आ चाबी लै। ऊपर वाळै आळै मे पाच हजार री अेक गडडी पडी हे। बा भी ईं नै लाय नै झला दे।

रमतियो — **(चाबी लैय नै)** अबार ल्यो। **(पूठो माय जावै परो)**

मगळजी — तू ऊभी क्यू है ? बैठ नीं।

गोमती — ना–ना म्हे ऊभी ही चोखी। लुगाई जठै अेकर बेठ जावै वा फैर बठै सू वैगी नीं उठै।

मगळजी — बात कूडी कोनी। अरे हा ऊदो सागै नीं आयो ?

गोमती — बै तो कणैई घमजी रै अठै गया जिका पूठा घिरया ही कोनी।

मगळजी — ऊदो व्होत स्याणो हे। इत्ता बरस म्हारै अठै रैयो अेक दिन भी इस्यो नीं के वीं कदै कोई अणूती बात करी हुवै।

(रमतियो माय सू नोटा री गडडी लाय नै गोमती नै झलावै।)

रमतियो — गिण लै।

गोमती — बैंक सू निकळयोडी गडडी है। ईं नैं काईं गिणणो ?

मगळजी — आ तो थारै कनै राखलै अर अेक बिनती म्हारी भी सुणबा री है।

गोमती — बिनती नीं थे तो हुकम करो।

मगळजी — **(हाथ जोड नै)** आज दिनूगै–दिनूगै थारै अठै जिकी अणओपती कैवासुणी हुई उण बाबत तू कोई ध्यान मती दिये।

गोमती — अजी ओ तो म्हैं थानै पैला ही कैय दियो कै बीती बाता नै बिसर जावो।

मगळजी — जणै वा।

गोमती — हा रमतिया तू अेक बात सुण लै। तैं कदैई औलै छानै कोई घात करणे री चेस्टा करी तो मूडो दिखावण जोगो नीं छोडूली। आ याद राख लिये।

रमतियो — ना–ना अेडी कोई बात नीं हुवै।

गोमती — चोखी बात है। पण आगै सू चेताचूक होवण री मूरखता मत करयै।

रमतियो — **(ऊदै नै बारै सू आवतो देखर)** ओ ल्यो ऊदै नै याद करयो ऊदो आयग्यो।

ऊदो — *(माय आवतै ही मगळजी नै देखर)* अररर ऽऽ!! ओ काईं हुयो?

रमतियो — आज दिनूगै अेक गोधो लडतो–भिडतो आरै माय आ पडयो। जगै–जगै तो चामडया छिलगी अर हाड जरकीजग्या जिका न्यारा।

गोमती — भगवान नै बचाणो हो जिको बचा लियो। नीं जणे आज तो जबरी हुवती।

ऊदो — म्हनै तो ठाह ही नीं पडी।

गोमती — थे अेक जगै टिको जद नीं। म्हैं तो ठाह पडतै ही पूछबा नै आयगी।

ऊदो — चोखो करयो।

मगळजी — आपणो हुवै जिको तो पैला पूगै।

ऊदो	म्हैं थानै कैयो हो नी थारी आ बीनणी ब्होत समझदार है।
मगळजी	जणैई तो सुणता ही भाजी आइ।
ऊदो	पाटीपोळा तो साफा थारा वाळा करया हुवैला ?
रमतियो	हा वठै सू पाधरा साफाखाना ही गया।
ऊदो	ओ आछो करयो। नी जणै तकलीफ घणी हो जावती।
रमतियो	तू अताळ अेकाअेक अठीनै कींकर आयग्यो।
ऊदो	म्हे तो म्हारै बी खेत वास्तै ना–ना अबार थे आराम क इस्यी कोई रातावळ को नी। सावळ हा जावो फेर कदै बात करस्या।
मगळजी	ठेत ता ।
ऊदो	ना–ना अबार घणा ना बोलो। फेर कणैई बात। (कैय गोमती सागै बारै निकळ जावै) (मगळजी माथो झालर बैठ जावै)
रमतियो	मामाजी ईं ऊदै री लुगाई रै आगै तो थे अबै पग–पग लुळता रैया हो। इया कींकर काम चालसी ?
मगळजी	देख म्हारै भेजै नै तो लकवा मारग्यो। अबै तू जाणै थारो का पण आ देख लिये ईं सू भींडणो सहज नीं है। ऊदरी रो f कोनी'कै झट हाथ घात देवै। सरपणी रो बिल है। माय हाथ घा ही काट खावैली।
रमतियो	आ तो म्हैं भी जाणू। पण ईं सरपणी नै जद तईं अपड नीं लू चैन कोनी। नखरो तो अब ईं रो भागणो ही है।
मगळजी	पक्की धार ली काई ?
रमतियो	अबै ता इ नै किणी भी तरै जाळ मे फासर कठै इस्यी जगै ले कै फूफाडा करणा ही भूल जावै।
मगळजी	देख भाया अेकर फेरू कैवू, ओ सैर कोनी गाव हैं। अठै बु साचणो ही मना है। म्हारी मनी मरगी कै म्हैं सदा अणूता ही करया। आज म्हनै आरी सजा मिळगी। इण सू तनै भी अबै सीख लेणी चइजै। आगे जू जाणै।
रमतियो	मामाजी अबै म्हनै टोको मती। सैर सू आवण रे बाद म्हैं आज मन री कोइ बात नीं करी। अबै म्हनै खुल्लो खलबा दो। जद म्हे ईं आग नै ठडी नीं कर काढू, सुख सू जी नीं सकू। अबै ह अर म्हैं हू। (कैय नै फुरती सू बारै जाव परो)
मगळजी	(खुदोखुद) लागे है घमासाण हुया बिना नीं रैवै। भगवान ईं सदबुद्धि देवै। (इण रै सागे ही मच पर अधारो घिरता जाय।)

सातवो दरसाव

(दिन रो वगत। ऊदै रै घर री आगली बैठक। हर जिनस सलीकै सू आप आपरी ठौड मेल्योड़ी है। इया लागै कै जाणै भण्या गुण्या रो रैवास हुवै। बारै सू आसियो हेला पाडे ऊदो घर में है काई ?)

ऊदो — (माय कानी सू) कुण आसू भाई ?

आसियो — हा।

(माय सू आय नै बाडो खोलै अर आसीयै नै माय बुलावै आवो-आवो)

आसियो — माय काई करै हो ?

ऊदो — बैठयो मायै री दावण कसै हो।

आसियो — ढीली पडगी ही काई ?

ऊदो — (हसतो) वा तो पडणी ही। बोलो कींकर आया ?

आसियो — कींकर काई ? थारै सुसरोजी सू मिळबा नै आयो हू। सुण्यो अठै आयोडा है।

ऊदो — हा। बेटी रो घर वस्यो देखणो चावै हा सो आयग्या। बैठो तो सरी।

आसियो — वैदू काई बाजो तो सारो बिगडतो जा रैयो है। सोहन काका तो आपारी जिद माथै अडयोडा है। बै काकी नै हीज कुरसी माथै बिठाणी चावै।

ऊदो — तो बिठाबा दो। आपा अेकर बोलो मती।

आसियो — नीं ऊदा नीं। अेक दफै वारी जिद जे पूरी होयगी तो आगै हमेसा बारी ही जिद चालैली। अेकर छूट दीवी नीं कै आपा रो गोडा लाग्या नीं।

ऊदो — म्हैं समझ्यो कोनी।

आसियो — अरे तू बानै नीं जाणै। बारो पैलो काम है बैरी नै हेटै गुडकाणो। इत्ता काइया है कै जीत्या नीं कै फेर आपा सू बदळो लिया बिना नी रैवै।

ऊदो — आपा जे आपणै मुद्दै मे सावचेत रैवा तो बै कीं नीं कर सकै।

आसियो — अरे तू इयै वैम मे मत रैये। बै जिका तिकडमा रा तीर छोडै आपणै कनै बारो कोई तोड कोनी। म्हारी बात मान। काकी रै साम्हैं थारी लुगाई नै खडी करणी ब्होत जरूरी है।

ऊदो	अेडी बात हे तो बा त्यार है।
आसियो	हा आ हुयी नीं वात। तो बीजणी नै कैय दियै कालै ही परचो भरणो है।
ऊदो	परचो तो बा भरभरा देसी। महताऊ बात आ है कै अवै बीं नै घर--घर जावणा पडेला।
आसियो	जावैली जद ही लोगा नै ठा पडसी कै सिरैपच वास्तै कुण सही है अर कुण गळत।
ऊदो	ई मामले मे तो भाईसा थारी काकी भी कम कोनी।
आसियो	कमती तो कोनी पण अजकाळे बा में इत्ती अक्कड आयगी कै दूज नै तो की समझै ही कोनी। अबै तो वै घर--घर जावण में भी अपारी हेठी समझै। अर ओ काम इस्यो है के जणै--जणै री मनुवार करणी हीज पडै।
ऊदो	जणै नुवी--नुवी लुगाया सू मिळया नै अर मेळ घातबा में तो थारी वऊ ब्होत आगे है। इया भी बा गाव री लुगाया मे चेतना री अळख जगावणी चावै है।
	(इणी वगत बारै सू खूमलै रो हेला सुणीजै घर में कुण होसी?)
ऊदो	*म्हैं हू ऊदो। कुण हो माय आ जावो।*
आसियो	म्हनै लागै पचायत रो गामसेवक खूमलो है। पण ओ वळयो अठै कीकर?
ऊदो	**(हौळेसी क)** कैडो का है ?
आसियो	ब्होत ही नुगरो अर गयाबीतो। ईं री छाया पडणी भी चोखी कोनी।
ऊदो	आवा दो। पैला पतो तो लागै क्यू आयो है ?
आसियो	**(खूमलै रो खखारो सुणर)** आयग्यो दीखै।
खूमलो	(माय आय नै) ऊदो थारो हीज नाव है ?
ऊदो	हा जी।
आसियो	क्यू, तनै ईं सू काईं काम है ?
खूमलो	**(बूकिया पर हाथ फेरतो)** आसू भाई खूमला बेवजै कठैई नीं जावै।
आसियो	जद तू ई नै जाणै ही कोनी तो अठै आवण रो मतलब ?
खूमलो	अताळ बतायो नीं म्हारै आवण रो कोई न कोई मतलब हुवै।
आसियो	म्हैं भी तो आहीज बात पूछ रैयो हू।
खूमलो	पण म्हारो मतलब जाणबा रो थानै काईं मतलब ?
आसियो	देख म्हारै मतलब री भासा तू समझैलो कोनी। नीं जणै तो म्हैं बताता देर नीं लगावू।
खूमलो	आसू भाई थे तो खामखा बीच मे टपक रैया हा। म्है आयो हू ईं ऊदै रै कनै अर था बीच मे ही थारी बेमतळब री डफली बजाणी सरू कर दी।

आसियो इण बारतै'कै थारी डफली कठै सरु नीं हो जावै। बा खोता रै सुरा सू भी ऊची बाजै।

खूमलो थे कैवणो काईं चावो हो ?

आसियो ओ'कै थारो पगफेरो कठै ही आछो 'नीं रैयो। म्हैं तनै कई जगा देख चुक्यो।

ऊदो भाईसा थे थोडा थमो। पैला ईं नै आपरी पूरी बात कैवण दो।

आसियो ओ काईं कैसी म्हैं सू छानो कोनी।

खूमलो था सू तो म्हैं अेकलो रीज छानो कोनी पण म्हारै सू तो कोई भी छानो नीं है। म्हैं सगळा री रग–रग जाणू।

ऊदो जाणता हुवोला। अबै म्हनै बतावो म्हारै लायक काईं सेवा है?

खूमलो सुणी है थारी लुगाई अजकाळै अपणैआप नै तीस मारखा घणी समझण लागगी ?

ऊदो कुण कैय दियो थानै ?

खूमलो कैवै कुण ? म्हनै किस्यो बेरो कोनी ? अताळ कैयो नीं कै म्हैं सगळा री खबर राखू।

आसियो हे SS ! तनै कीं खबर है न कोई बात। सू तो म्हारै सिरैपच काका रो रमड रो रमतियो है। वै ज्यू चावी देवै सू बोल जावै।

खूमलो लागै थारी थारै काका सू बणै कोनी ?

आसियो वा सू तो खूब बणै। पण वारी अणूती बाता म्हनै दाय नीं आवै।

खूमलो कोई काकै रो भतीजो तो थानै ही देख्यो जिको बेमतलब वा सू खुदक काढ रैया हो।

आसियो वै जे म्हारा सगा काका भी होवता तो खरी बात कैया बिना नीं रैवतो। ईं नै चावै खुदक समझ चावै और कीं ?

ऊदो म्हारी समझ में आ नीं आवै'कै काकै भतीजै री बाता नै अठै बीच में क्यू लावो ? म्हैं तो ओ जाणवो चावू'कै म्हारी तीसमारखा लुगाई रो थे काईं कोई इलाज करवा नै आया हो ?

खूमलो इलाज तो करणो ही पडसी।

ऊदो इलाज करता बेळा काईं–काईं दवा देवोला ओ तो बता दो जिको म्हैं ले आवू।

खूमलो म्हैं जिकै रो इलाज करू बीं मे दवा री दरकार नीं हुवै।

ऊदो जणै थे थोडा ठैरो। वा बस आवण वाळी है।

आसियो कठै गयोडी है ?

ऊदो आपरै जी सा रै सागै घमजी रै अठै।

आसियो जणै तो घणी अळगी नीं गई।

ऊदो गई नै ही घणी ताळ होयगी। अबै तो आई चावै। पण हा इलाज चोखी तरिया कर्या। नीं जणै इया नीं हुवै'कै बा तीसमारखा री जगै चाळीसमारखा बण जावै।

खूमलो लागै तनै भी बाता रो रोग लागग्यो।

ऊदो — ई रो भी कोई इलाज हुवै तो बतावो नीं। बाता करबा मे म्हनै तकलीफ भी घणी हुवै।

आसियो — ई रै वास्तै तो ई खूमलै कनै ओक अचूक इलाज है। कतरणी सू साम्हे वाळी री जीभ काटी नी कै रोग खलास। अब तई पतो नीं ई कितरा रो ही इलाज कर दियो। क्यू आ ठीक बात है नीं ?

खूमलो — म्हनै आ बतावो थे म्हारा छोरा उतारणै में ही क्यू लाग्योडा हो?

आसियो — तू तो लोगा रा मायला कपडा भी उतार लेवै तो की नीं अर म्हैं कदैकदास कोई रा बारला छोडा उतारू तो तनै खीज आवै क्यू भई?

खूमलो — देखो इयाकली बाता करनै म्हनै रीस मती अणावो। नीं जणै—।

आसियो — नीं जणै काई ? बोल–बोल।

(इणी वगत बारै सू छाणा री बोरी उखण्योडी गोमती आ जावै)

ऊदो — अरे तू तो थारै जीसा रै सागै घमजी रै अठै गई ही नीं ?

गोमती — गई ही। जीसा नै बठै ही छोड आई अर म्है आवतै ही लारै नोरैमें गई परी।

ऊदो — जणै ही आ छाणा री बोरी ल्याई है।

गोमती — (बोरी हेटै न्हाखर) हा जी। अै भाईसा कुण है ?

ऊदो — (ओक आख मार नै) थारो इलाज करबा नै आया है।

गोमती — (बात नै झट समझतै ही) तो करो नीं। घणो ही आछो। निरा दिन होयग्या मादगी जावै ही कोनी।

ऊदो — आ तो बता आनै कै काई लखावै है ?

गोमती — म्हारै हाथा में खाज व्होत आवै। ओक–दो अलडा रै जद ताई थप्पड–मुक्का री नीं देयलू तद तई म्हारे हाथा री खाज मिटै ही कोनी।

ऊदो — आ भी तो बता अब तई तै कित्ताक नै पाधरा कर काढया। क्यूकै अै तनै ओजू तीसमारखा ही समझ राखी ही।

गोमती — अजी तीसमारखा तो म्हैं जद दसवीं मे पढती ही उण टेम ही। अबै तो की चार–पाच गुणा बेसी ही हू।

ऊदो — (खूमलै सू) ल्यो सा। आ आयगी। अबै थानै जिको इलाज करणो है करो। कैवो तो माय सू छुरी काटा ल्यार झला दू ?

आसियो — सोचै काई है खूमला ? जिकै काम सू काका तनै भेज्यो है बी कानी ध्यान दे।

खूमलो — थो थो थोडा । (रीस में उफणतै रा मूडै सू बोल नीं निकळै)

गोमती — कठै आ तो नीं हुयी कै म्हारी मादगी म्हैं सू निकळर आ मैं बडगी हुवै?

आसियो — सरीर रो काई भरोसो ? घणी दफै ओक रो ताव उतरै अर दूजै नै चढ जावै।

ऊदो — जणै तो बाजी ही पळट जासी।

गोमती — फेर तो आरो इलाज कठै म्हनै नीं करणो पड जावै ?

खूमलो — (रीस में तातो बळतो) थे काई कवो म्हैं स्सो जाणू। (गोमती सू) लागै थारी जीभ ब्होत लपर–लपर करै। (ऐकाऐक हाथ अपडतो) अबै बोल करू थारो इलाज?

(हाथ अपडतै ही गोमती बीरै इस्यो बटको बोडै कै बीरै मू सू चीख निकळ जावै ओय मरग्यो रे ओय मरग्यो रे)

गोमती — हरामजादा पैला तू बैगो सो थारो इलाज करवा। नीं जणै साचै ही मर जावैलो।

ऊदो — (आगै बधर थप्पड़ मुक्का री मार मार'नै खूमलै नै हेटै न्हाखतो) फेर कदैई अठीनै आयग्यो तो कादो काढ कादूलो। तू कोई भरोसै भूलग्यो है।

खूमलो — (दोरो दोरो उठतो सो) म्हैं म्हैं म्हैं थानै ।

आसियो — .. फेर कदैई देख लेसू – ओहीज न ! जा–जा आ गीदड भमकी कोई और नै दिये।

खूमलो — थे..... थे.... थे भी सावचेत रैया।

आसियो — तू जावै क नीं ? नीं जणै म्हारा हाथ चालग्या तो मूडो लुकावणा नै जगै नीं मिळैली।

(खूमलो मन ही मन कसमसातो सो झट बारे निकळ जावै)

गोमती — (ऊदै सू) थारा हाथ तो ब्होत घालै। मारतै–मारतै त्यायी नै अधमरो कर दियो। कीं तो दया राख्या करो।

ऊदो — तू भी तो आव देख्यो न ताव झट बटका बोडती ही हुई।

गोमती — (कान अपडती) हा आ तो वाकई भूल हुई। बीं हाथ अपड़ लियो तो फेर म्हनै बीरै सागै ही चल्यो जावणो चइजतो।

(आ बोला रै सागै ही सै जोर जोर सू हसबा लागै कै मच पर छायो उजास अधकार में बदळतो जावै।)

□

आठवो दरसाव

(दिन रो बगत। गाव रो अेक चौराहो। धूड़जी हाथ में लाठी लिया अेक कानी बैठया रैय रैयर कणै डावै कानी जोवै तो कणै लारै पासी।)

धूडजी (खुदोखुद) ओ गाव तो सगळा सू न्यारो है। अठै लुगाई जात नै तो ऊची उठयोडी कोई देखणो ही नीं चावै। फेर भणी–गुणी तो कींनै आख्या देख्या ही नीं सुवावै। म्हारी गोमती अठै री सिरैपच काईं वणगी लोगा री निजरा मे सागीडी रडकण लागगी। खासकर बा लोगा नै तो जिका ठावा–ठाढा गिणीजै आछी लागै ही कोनी। कित्ती अचम्भै री बात है कै लारला सिरैपच सोहनजी आपरी घरआळी नै चुनाव मे हारती देखर आपरो आपो ही न्हाख दियो। रीस मे आय'नै लोगा रै गळै पडणो सरू कर दियो। सैणसगती तो दीखै बा मे जम्मा ही कोनी।

(इणी बगत जीवणै कानी सू घमजी आ जावै)

घमजी बधाई हो धूडजी। थारी बेटी अठै री सिरैपच धुणीजगी।

धूडजी हा आ बधाई तो थानै है। था हीज बीं नै खडी करी ही।

घमजी लायकी देखी जणेई तो बींरो नाव साम्हैं आयो।

धूडजी आ तो थारी अपणायत है।

घमजी अबार अठै कींकर ?

धूडजी बाई अर कुवरसा नै बैठयो अडीकू।

घमजी बै फैर दिनुगै–दिनुगै अठीनै कठीनै गया है ?

धूडजी तेजाजी री तळाई कानी।

घमजी बठै काईं काम पडग्यो ?

धूडजी काम तो कोई अचाणचकै ही आ पडयो।

घमजी मतळव ?

धूडजी दो गडकडा हा अेक काळो नै अेक कबरो। भोर वाळो तारो ऊग्यो ही नीं हो कै माटा घर रै बाडै आगै आय'नै जोर–जोर सू भूकण लागा कै म्हा सगळा री नींद उचटगी।

घमजी इस्या गडकडा फेर कठै सू आ मर्‌या ?

धूडजी भगवान जाणै ।

घमजी बारै आय'नै लाठी री दी होंवती ?

धूडजी — ऊदोजी ल्यायी बारै आया तो बारै माथै अेकाअेक झमूटग्या। इत्तै में म्हैं भी पूगग्यो। देख्यो तो वाकई यै तो ब्होत खतरनाक हा। बैगो सो माय जाय नै लाठी लैय'नै आयो नै बारै पर टूट पड्यो। खडखडाट सुणर गोमती भी बारै आयगी।

घमजी — गोमती तो कीं सू डरणो सीख्यो ही कोनी।

धूडजी — पण यै गडकडा भी इस्या हा'कै अेकदम फीटा। ऊदोजी नै छोड'र यै गोमती रै लारै लागग्या।

घमजी — पण थे तो तीन हा।

धूडजी — जणैई तो बानै हेटै न्हाख लिया। जे थोडी सी चूक हो जावती तो यै गोमती नै नोच काढणै मे कोई कसर नीं छोडता। भायैजोग सू ऊदैजी नै अेक गैंती हाथ लागगी। बा ज्यू ही अेक री फींच्या मे गैंती मारी कै बोकणो सरू। फेर तो अेक मिनट भी नीं थम्या अर भाग छूटया।

घमजी — मरो ऽऽ!! फेर कठीनै गया ?

धूडजी — अठै तईं तो म्हैं सगळा ही लारै नाठया आया। म्है थोडो थाकग्यो तो अठै बैठग्यो अर यै दोनू बानै खदेडता खदेडता ई नै ही गया है।

घमजी — तळाई कानी।

धूडजी — हा जी।

घमजी — इस्या खूखार गडकडा पैला तो अठै कदे नीं देख्या।

धूडजी — खूखार क्यारा है जी। लाठी अेक ही सातरी पड जावै तो फेर बोकता ही नीं थमै।

घमजी — इयाकलै गडकडा नै तो गाव सू बारै काढणो पडसी। नीं जणे यै तो कींरी भी पींडी झाल सकै।

धूडजी — ओ तो था नुवा पचा ने सोचणो है।

(अेकाअेक जीवणै कानी सू ही सोहनलाल मगळजी नै ठरडता सा लावै)

घमजी — आ मगळजी नै कींकर झाल राख्यो है ?

सोहनलाल — अै घर रै बारणै ऊभा गोमती रो नाव ले–लेयर बडबडावै हा।

घमजी — काईं बात हैं सेठा ?

मगळजी — अै तो कू कू कूड बोले।

सोहनलाल — कूड म्हे बोलू या थे ? म्हैं जद थानै कनै जायर पूछयो कै गोमती थारो काईं बिगाडयो तो थे काई उथळो दियो ? बतावो आनै।

मगळजी — म्हैं तो गोमती रो नाव ही लियो कोनी।

सोहनलाल — **(हाथ मरोडता)** फेर कूड।

मगळजी — पैला म्हारो हाथ तो छोडो।

सोहनलाल — नीं पैला आ बतावो थे कैयो काईं हो ?

मगळजी — कीं कैयो हुवै तो बतावू।

सोहनलाल — थे इया नीं बतावो। (केय ने हाथ थोडो करडो मरोडै)

मगळजी (अरडावतो) बतावू–बतावू। रात नै रमतियो बोल्यो कै म्हैं गोमती नै तडकै–तडकै ही घर माय सू सूती नै उठार ले जासू परो।

घमजी तो काईं उठार लेयग्यो ?

मगळजी ओ तो के बेरो ? म्हें तो बींनै मन ही मन कोसै हो कै जण अै आयग्या।

घमजी अबै कठे है वो रमतियो ?

मगळजी बो तो लागे बीं नै लेयर कठै भाजग्यो ।

सोहनलाल अर थानै अेकलो छोडग्यो !

मगळजी और रोवणो ही क्यारो है ?

घमजी तो काईं थारो भी बींरै सागै ही जावण रो मतो हो ?

मगळजी नीं जणै अठे अेकलो रैयर फेर करतो काईं ?

घमजी हुऽऽ ! ! !

सोहनलाल ओ तो आछो हुयो कै म्हैं आनै अपड ल्यायो। नीं जणै थे सगळा आहीज कैंवता कै खूमलो हीज ओ नीच काम करयो है। अर बींरै लारै रगडीजतो म्हैं।

घमजी खूमलो तो इण टैम आपरी ठौड ही हुवैलो!

सोहनलाल दूजी ठौड बो बेमतळब कठै जावै भी कोनी। बींनै तो कोरो बदनाम कर राख्यो है। चैरै सू भला ही बो भूडो लागो मन रो काळो कोनी।

घमजी (धूडजी कानी हाथ कर नै) आनै तो थे जाणो हीज हो ?

सोहनलाल क्यू नी ? अबार चुनावा री बगत कई दफै मिळबा रो मौको मिळयो। ऊदे रा सुसरोजी ही है नीं ?

घमजी हा।

सोहनलाल बेटी रे सिरैपच होवण री बधाई है।

धूडजी बधाई क्यारी है सा ? बेमतळब अेक आफत माल ले लीन्हीं।

सोहनलाल अजी ओ धन्धो तो इस्यो हीज है। ठौड–ठौड लोगा री नीं सुणणजोग बाता भी सुणणी पडै।

घमजी बै तो सुणै जिकी सुणै ही दूजा फजीता भी घणा। लुगाई री जात ठैरी। कुण–कुण सू माथो लगावै ?

धूडजी स्यै सू मोटी बात तो आ कै उण भेडिया सू कोई कींकर निपटै जिका रो काम ही बाई–बेटया री इज्जत लूटबा रो है ? इण रै वास्तै बा नै कठैई भेज दो बै त्यार है।

घमजी जिया आरै भाणजै रमतियै नै ही लेल्यो। बीं जिस्या काळै मू रा लगूर तो किणी टैम काईं भी कर सकै।

धूडजी कोई सावचेती बरतै भी तो कठै ताईं बरतै। इयावलै लोगा रो कोई भरोसो कोनी। कणै भी कोई घात कर सकै।

आसियो (आवतो आवतो) इया धारा कर बैठे क्यू अठै कोई मिनख को बसै नीं काईं ?

घमजी घात करणिया भी तो मिनख ही है।

आसियो — कूडी बात। घात करणिया कदै मिनख हो ही नीं सकै। ओ काम भेडिया रो है अर बाने सबक सिखावणो कोई घणो अबखो काम कोनी।

घमजी — तू कैवै जिको म्हैं समझू हू। अेकर तू ओ पतो लगार आ कै आ मगळजी रै रमतियै इण बगत कठै काईं रम्मत घात राखी है ?

आसियो — कठैई चवडै नै कठै ओलैछानै रम्मत घालणे रै सिवाय बींरै कनै और काम ही काईं है ? थे कैवो तो अवार ठाह कर आवू ?

धूडजी — अेकर ठैरो। गोमती अर ऊदोजी आ जावै तो पछै ठाह कर्‌या।

घमजी — (अेकाअेक लारै देख नै) ल्यो नाव लियो अर वै आयग्या।

(सगळा जणा लारै कानी देखवा लाग जावै)

आसियो — (गोर सू देखतो) काईं बात है ? ऊदो काधे पर लादया कींनै लावै है?

घमजी — वै गडकडा हुवैला ?

सोहनलाल — म्हनै तो ओजू सावळ दीखै ही कोनी।

धूडजी — नीं दीखै जित्तै ही ठीक है।

मगळजी — वीं गोमती भी तो कींरो झोटो झाल राख्यो है।

धूडजी — थोडो तीखी निजरा सू देखा।

आसियो — अजी ऊदै रै काधे पर जिकै राफा टैर राखी है बींनै तो अब ओळख लियो।

सोहनलाल — अै घमजी कैवै है नीं के कोई गडकडो है।

आसियो — गडकडो क्यू है ?

सोहनलाल — तो फेर मर्‌यो बो कुण है ?

आसियो — थारै खूमलै रै सिवाय दूजो और कुण हो सकै ?

सोहनलाल — बोलो रैय। अेडै मौके भी तनै मसखरी सूझै ?

आसियो — तो वा। अठै आवै जद देख लिया।

घमजी — गोमती जिकै नै ठरडती ला रैयी है बो गडक तो कोनी। जरूर कोई मिनख ही है।

मगळजी — हाऽऽ ! ! बो तो साची कोई मिनख ही दीखै।

आसियो — (राजी होंवतो) ल्यो म्हैं तो दोना नै पेचाणग्यो।

घमजी — काईं पैचाण्यो ? कुण है ?

आसियो — गोमती बाई जिकै रो झोटो झाल राख्यो है बो तो है मगळजी रो रमतियो अर ऊदे रे काधे पर लादीज्योडो आवै है खूमलो।

मगळजी —

सोहनलाल — (दोनू अेकै सागै) ना—ना आ नीं हो सके।

मगळजी — रमतियो तो अेकलो हीज गयो हो वी रै सागे बो खूमलो कठै सू आयग्यो?

सोहनलाल — खूमलो अताळ ही म्हारै अठै दूधरी बरणी राखर गयो हो।

धूडजी — नाई—नाई केस कित्ता ल्यो अे साम्है आयग्या।

(इणी वगत काधै पर खूमलै नै लाद्या ऊदो अर रमतियै रो झोटो झाल्या गोमती आ जावै)

आरियो ल्यो कूड–साच आपई अपडीजगी।

घमजी तो जणै औरीज गाव रा गडकडा है ?

धूडजी आप–आपरै नै चोरटी तरिया पैचाण ल्यो। ओहीज दोनू भोर मे आय नै ऊदै जी रै अठै इस्यो अणूतो घमाराण मचायो कै कैवण में नी आवै।

ऊदो बावोसा थे थारै ईं खूमलै नै सभाळो अर सेठजी थे थारै रमतियै नै।

गोमती ना–ना ओ रमतियो तो पुलिस थाणै रो पावणो है। ईं रै वास्तै आपां की नीं कर सका।

घमजी इये फेर इस्यो काईं कर दियो ?

गोमती ओ तो ईं नै ही पूछो। दो वरस पैला सैर सू भाजर अठै क्यू आयो?

घमजी क्यू आयो ?

गोमती लुकवा नै।

घमजी (रमतियै सू) काईं वात है रे ?

मगळजी (वीच में ही) ईं नै काईं पूछो ? म्हनै पूछो नीं। ओ कोई भाजर अठै नीं आया। म्हैं वुलाया हो ईं नै।

गोमती भायलै रै भाणजै नै झूठमूठ वचाणै री चेस्टा मत करो ? ईं नै खुद नै ही पूछो कै करतूरवा गाधी कन्या आसरम री ओक वहण सागै ईं काळो मूडो करयो क नीं ?

रमतियो । (कोई उथळो नीं देयर माथो नीचै कर लेवै)

ऊदो अबै बोलै क्यू नीं ?

रमतियो । (फेर भी बोलो रैवै)

गोमती ओ तो थाणै जाया ही सारी वाता उगळसी।

मगळजी थारा जद इस्या कौतक कर्योडा हा तो बाळणजोगा म्हनै बतायो तो हुवतो?

घमजी ईं नै हेटै तो बिठावो।

(गोमती झोटो झाल्या ही रमतियै नै हट बिठावै)

घमजी सोहनलालजी अवै तो थे भी खूमलै नै पैचाण लियो ? ओहीज दिनुग दूध पूगार गयो हा क कोई दूजा ?

सोहनलाल म्हैं ता उण टैम साच्यो ओहीज हुवैला। दिनुगै–दिनुगै ओहीज दूध देयर जाया कर। पण ईं रै हाथा म जद आ काळै करतूता री स्याही लाग्योडी है जणै फर बा कोई दूजो ही हो।

धूडजी जोगमाया री किरपा सू आज गाव मे कोई अणहोणी होवती टळगी।

आरियो इया कैवो'के ऊदे अर गोमती रै कारणे गाव री आज इज्जत रैयगी।

घमजी सोहनलालजी कोई जे दो कडवी बात कैवे इण सू पेला आप ईं खूमलै नै पचायतघर मे पुगवा दो तो घणो आछो।

ऊदो	अर म्हे ईं रमतिये नै ईं री असली ठौड पुगा देवा। क्यू सेठा?
मगळजी	म्हारै आगै तो ईं हरामजादै रो नाव ही मत लेवो।
घमजी	वा वाई गोमती तैं तो आज गाव रो नाक ऊँचो कर दियो।
गोमती	ओ जस तो आनै (ऊदै नै) दो जिका हिम्मत राख'नै आ कुमाणसा नै काबू कर्‌या पछै ही सास लियो।
ऊदो	तू साथै नीं होंवती तो म्हैं अेकलो काईं करतो ?
घमजी	हाथ तो दोनू मिळाया ही धुपै।
गोमती	आ बात सगळा जाण जावै जद नीं।
घमजी	चिन्ता ना कर। वगत आया स्सै जाण जासी।
आसियो	तू तो दियै री बा जोत है जिकै रै होवता अधारो आपैई आख्या सू ओझळ हो जावै।
घमजी	दुनिया नै अबै ही तो ठाह पडसी'कै ईं गाव री गोमती कुण है?
धूडजी	अजी आ अेक इयै गाव री ही गोमती नीं है गाव–गाव री गोमती है।
आसियो	ईं नै देखर ही तो जोत सू जोत जळैली।
	(ईं रै साथै ही स्सै भेळा होय'र अेकैसागै मगळगीत गावै कै पडदो हेटै गिरणै लागै)

□

जबरी करी जायोड़ै

›

जबरी करी जायोडै

पात्र

१	भीमजी	कोढ रा मरीज यूढा डैण।
२	गीता	भीमजी री घरवाळी।
३	भवरो	भीमजी रो वडो बेटो।
४	फूसाराम	भीमजी रो सेवक।
५	ममता	भीमजी री दोहिती।
६	गोदूजी	भीमजी रो पाडोसी।

(दिनुगै री बेळा। तखत पर भीमजी बैठ्या आपरै पगा रै घावा पर फूसाराम सू मल्लमपट्टी लगवावै। कनै कुरसी माथै बैठी गीता पखी हिलाती हवा करै।

गीता — (भीमजी रै घावा कानी देख'र) अजी अबै तो पग म्हनै कीं सावळ होंवता दीसै।

भीमजी — ओ तो फूसाराम री सेवा रो फळ है।

गीता — साची ईं री सेवा नै तो कोई पार ही नीं पा सकै।

भीमजी — सेवा तो वाहीज जिकी साचै दिल सू करी जावै।

फूसाराम — भाईसा आपरी सेवा तो म्हारो धरम है।

गीता — अर ओ धरम तू लारलै तीरा बरसा सू बरोबर निभा रैयो है।

फूसाराम — भाभीसा ईं मे कोइ किरयावर कोनी। भाईसा म्हारै सू निरा बडा भी तो है। फेर मा म्हारी म्हनै जळमतै ही मरगी अर जद दस बरस रो हुयो तो बापूजी चालता रैया। उण वगत भाईसा जे म्हारो हाथ नीं झालता तो आज पतो नीं म्हैं कठै हुवतो।

गीता — ओ ता म्हनै स्सै ठेरो है।

भीमजी — (पग भेळा करता) अबै बा। तू हाथ धोय लै अर खूमलै रै अठै सू बैगो सो दूध ले आ।

फूसाराम — अबार ल्याऊ। (कैय नै हाथ धोवै अर बरणी लेय र बारै निकळ जावै)

गीता — ईं री बरोबरी तो कोई कर ही नीं सकै।

भीमजी — पन्द्रै बरस होयग्या म्हानै ओ रोग लाग्या। छूत रै डर सू जायोडै भी पीठ फेर ली। पण ईं बन्दै कदै सिसकारो भी नीं न्हाख्यो।

गीता — जायोडै मे अकल अर अपणायत होवती तो आज घाटो ही क्यारो हो। लुगाई नै लेय र इस्यो अळगो हुयो कै मिळणै रा ही सासा पडग्या।

भीमजी — जद खुद रो सिक्को खोटो हुवै तो दूजै नै तो कैय ही नीं सका। जिको खुद जाणबूझ र आपरो तबादलो जैपर करा लेवै बीं सू फेर आगै री उम्मीद हीं काईं राखणी ?

गीता — जदकै भवरै नै पतो हो के थारी हालत ठीक कोनी।

भीमजी — खैर जोग–सस्कार री बात। पण आ कदै नीं सोची कै अेक दिन खुद रो खून ही बदळ जासी।

गीता — घणो अणेसो ना करो। काळजो तो म्हारो भी ब्होत कळपै जद वींरी अणूती हरकता देखू।

भीमजी — अेक ही बेटो अर वो भी मा–बाप नै भूल जावै इण सू बत्तो दुरभाग और काईं होसी ?

गीता — करयो काईं जावै ? वीं सू इत्तो भी नीं हुवै कै कदै टाबरा नै मिळणै री मिस ही अठै ले आवै।

भीमजी — कींकर लावै ? वीं नै ओ पतो है कै म्हानै छूत रो रोग लाग्योडो है।

गीता — कोढ कोई छूत रो रोग कोनी हुवै। म्हनै अर फूसाराम नै तो नीं लाग्यो इत्ता बरस। वींनै तो कोरो वैम खावै कै थारी आ बीमारी कठै वींरै टाबरा नै घेरै मे नीं ले लेवै।

भीमजी — जणैई तो वो वानै म्हा सू अळगो राखणो चावै।

गीता — टाबरा री बात कोनी। बो लुगाई नै भी तो नीं लावै। ना लावो वीं रै बिना म्हारो कोई काम अणसरयो नीं रैवै। आ तो बात री बात है।

(इणी वगत गोदूजी आ जावै बारै सू)

गोदूजी — राम–राम मास्टरजी।

भीमजी — राम–राम गोदूजी। आवो बिराजो।

गोदूजी — (तखत पर ही भीमजी रै पगा कानी बैठता)
मास्टरजी पगडै तो रस्ते मे चिमनलालजी मिळग्या हा।

भीमजी — सेठ चिमनलालजी ?

गोदूजी — हा जी। बोल्या – आपरै माय आठ हजार री कलम बाकी है। दो बरसा सू ब्याज माथै ब्याज चढतो जा रयो है।

भीमजी — हा म्हानै बेरो है। बारो तगादो सही है। पण काईं करा गोदूजी पेसन रा इण्या–गिण्या रिपिया मिळै ।

गीता — .. .. अर वा सू घर री खरचो भी नीठ चालै। ऊपर सू आरी आ बीमारी।

गोदूजी — बहनजी साची कैवो। मैंगाई भी तो बेजा ही बधती जा रैयी है। करणे वाळो कोई करै तो काईं ?

भीमजी — छोरै कानी सू तो थे जाणो ही हो बारह बज्योडी है। अेक पइस री मदद भी किस्यी क।

गोदूजी — जदकै वो तो बैंक मे लाग्योडो है।

गीता — फेर वींरी बऊ भी तो कमावै है।

भीमजी — वींरै कनै कोई कमी कोनी।

गोदूजी — सुण्यो है जैपर मे बी लारलै दिना कोई बगला भी बणायो है ?

गीता वणावै क्यू नीं ? खुद रै वास्ते तो बो जित्तो भी खरच करै कम है।

गोदूजी पण अठै नीं भेजै।

गीता मत भेजो। वीं रै कारणै कोई भूखा नीं मरा।

भीमजी भूख मरणै री वात कोनी। कीं भेजतो तो माथे पर आ उधार नीं रैंवती।

गीता उधार भी वा जिकी सुरसती री बेटी ममता रै ब्याव माथै लीन्हीं।

भीमजी मायरो कोई हजार बारह सौ मे नीं मरीजै। बीं तो इत्तो भी नीं सोच्यो कै म्हारी बहन नीं है तो बींरी बेटी रै ब्याव मे तो कीं थोडी-घणी मदद करू जिण सू बी री आत्मा नै सायती मिळै।

गीता अेक ही बहन ही अर आ अेक ही भाणजी .. ।

भीमजी पण हियो हुवै जद नीं। बींरै वास्ते बहन मरगी तो कीं नीं अर भाणजी परणीजगी तो कीं नीं।

गीता बो तो अेकदम मो बायरो हुयग्यो।

गोदूजी जणै हीज तो बीं नै अठै कानी सू कोई लगाव कोनी।

भीमजी बीं नै जे लगाव होवतो तो आज ई टापरै री आ हालत नीं होवती।

गीता च्यारू कानी सू पडू-पडू हो रैयो है।

भीमजी म्हारी इत्ती पोसायत कोनी कै कोई कारीकुपरी करा सका।

गीता माथे रा लैणिया-दैणिया ही को मिटै नीं तो कारीकुपरी काई माथै री करावा?

(इणी बगत बारै सू दूध लेय नै फूसाराम आ जावै)

फूसाराम बधाई हो भाभीसा भवरो आयो है।

गोदूजी जणै तो बडा भाग। अताळ बीं नै याद ही करै हा।

भीमजी कठै है ?

फूसाराम बारै खींवजी खाती रै बैटै खूमलै सू बाता करवा नै ऊभग्यो।

भीमजी करमहीण नै सदा अकलहीण ही मिळया करै।

गोदूजी दोनू वाळगोटिया भी तो है।

गीता क्यारा बाळगोटिया है ? बो खूमलो तो नागा रो नागो है।

गोदूजी किया ?

गीता किया काईं ? बीं तो आपरी मा नै भी नीं बगस्यो। मा रै कनै अेक चादी री रमझोल ही खूमलै बा भी नीं टिकण दी।

गोदूजी काई कर्‌यो ?

गीता ओळै छानै ले जाय नै कीं नै बेच काढी। बा लायण रोवती ही रैयगी।

भीमजी — जणै इस्या रा भायला तो इस्या ही होसी।
गोदूजी — पण जाणा भवरो पूमलै दई कोनी।
भीमजी — स्सै अेक ही थैली रा चट्टा–बट्टा है।
गोदूजी — खैर भवरो आवै तो म्हनै मिळबा दो। वीं नै कैवू तो सरी के भाया थोडो ध्यान अठीनै कानी भी दै। और कीं नीं तो वारली तिबारी री तो मरम्मत करा जा। अेकदम पडणै ज्यू हो रैयी है।
भीमजी — वीं नै केयर क्यू दोरा हुवो ? बो आयो है तो जरूर आपरै कोई मतळब सू आयो है। ईं काम वास्ते वीं रै कनै टैम ही नीं होसी।
गोदूजी — जणै या। बेमतळब माजणो गवावण में फेर काईं सार है ?
भीमजी — कोई सार कोनी।
गोदूजी — तो फेर म्हैं चालू। (कैय नै वारै निकळ जावै)
गीता — अै तो सोचै भलै री अर बो उळटो .. ।
भीमजी — .... जिकै रो सोच ही उळटो है वीं नै हर बात उळटी सूझै। खरी बात भी कूडी लागै।
फूसाराम — (वारैं सू कोई रै आयण रो खडको सुण र) भवरो आयग्यो दीखै।

(भवरो माय आवै)

भवरो — (भीमजी अर गीता रा पग छूवतो) पगे लागू।
गीता — जींवतो रैय। मोकळो कमावै नै सुखी रैवै।
भीमजी — अेकलो ही आयो है या सागै भी कोई है ?
भवरो — नीं अेकलो ही हू।
भीमजी — इया अचाणचकै कींकर ?
भवरो — कोई जरूर काम सू आवणो पडग्यो।
गीता — बाकी टायर–टीकर तो राजी है ?
भवरो — हा मोटू नै विचाळैसी क थोडो जुकाम होग्यो हो अबै ठीक है।
भीमजी — अजकाळै हारी–बीमारी कीं ज्यादा ही है।
गीता — बीनणी रा काईं हाल है ?
भवरो — आछा है।
फूसाराम — भवरा अबकै तो तू थकग्यो लाडी।
भवरो — काका सैरा री कोई जिन्दगी थोडै ही है। माडाणै रैवणो है।
फूसाराम — बतावै वठै मिनखा रो तो कोई छेडो ही कोनी।
भवरो — और नीं तो। जठै देखे बठै ही मार–भचाभच।
गीता — इत्ती भीड।
भवरो — भीड तो कीं नीं मोटरा रो धुओ देखो। सास ही नीं लेइजै। माथै में इस्यो चढै कै जीणो हराम कर देवै।

गीता — फेर तो बठै रैवणै रो धरम ही कोनी।

भवरो — मा म्हारी जठै नौकरी करणी है बठै रैवणो तो पडै ही।

भीमजी — अर रैवे जिकै नै ढग रा मकान नीं मिळै।

भवरो — इयै खातर ही अबकळै म्हनै सीर सू अळगो रैवण री जुगाड बिठाणी पडी।

फूसाराम — काई जुगाड करी ?

भवरो — जैपर सू खासी दूर अेक नुवी बस्ती म छोटो सो घरियो बणावणो पड़ियो।

भीमजी — घरियो।

भवरो — हा। बठै अेक भलो आदमी आपरै रैवण सारु कोई घरियो खडो कर लेवै वोहीज व्होत है।

गीता — अताळ गोदूजी तो बतायग्या'कै तैं बठै कोई बगलो बणायो है।

भवरो — बगलो काई गढ बणायो है। तू भी मा लोगा रै कैयै मे झट आ जावै। बठै अेक–दो कमरा बेसी बणाया नीं क अठै रा लोग बींनै बगलो ही समझण लाग जावै।

गीता — कमरा बेसी बणाया है तो रिपिया भी निरा लाग्या होसी ?

भवरो — लागणा हा जित्ता तो लाग्या ही। अेकर तो बैंक सू लोन मिळग्यो पण वीं री किस्ता तो चुकावणी पडसी। कोई सू मदद री उम्मीद तो करणै सू रैया।

भीमजी — मदद तो अबै कुण करै ? म्हे तो म्हारै ही करज में डूब्योडा हा। थारो ता हमेसा इया ही रोवणो रैयो। ई टापरै नै बेचण री कैवा तो थे सीधा गळै ही पडता हुवो। कोई नै बेच–बेचार निक्की करता तो आज म्हने भी की सायरो लागतो।

गीता — चोखो जण्यो रै म्हैं तने। अरे बावळा ओ टापरो बेच देवा तो म्हे जासा कठै? कोई दरडै मे ? म्हानै काई रैवण री ठौड नीं चइजै?

भवरो — आ मत कैय मा। असल म था लोगा सू ई टापरै रो मोह नीं छूटै।

भीमजी — भवरो ठीक कैवै। आपा नै अब कित्ता क दिन जीणो है ? आज मर्या काले दूजो दिन।

भवरो — ओ तीखा तीर मत छोडा जी सा। म्हारी बात नै समझो। मा ता म्हारै सागै अवार जैपर चालसी परी म्हैं ई नै लेबा नै ही आयो हू। अबै लारै रैया थे। फूसै काकै रै नोहरै मे अेक ओरडी है .. ।

फूसाराम — बा तो है। थोडो घणो घासफूस भलै ही मेल राख्यो हुवै बाकी खाली पडी है।

भवरो — बठै जी सा री खाट तो आछी तरिया बिछ जासी।

फूसाराम — क्यू नी ?

भवरो — रैयी बात उठबा–बैठबा री। तो भायला थारा घणा ही है हथाई करणै वाळा। अेकलो थानै कोई नीं छोडै।

फूसाराम — बठै की बात री कोई तकळीफ भी कोनी। पाणी री अेक मटकी मेल देसू। टैमसर जीम्या पछै सारे दिन खूटी ताणर सोया।

भवरो — सेया मे इया भी था कदैई कोई कमी नीं राखी।

गीता — तैं थारै मन री कैय दी। अबै म्हनै आ बता तै आ कींकर सोचली कै म्हैं थारै सागै अेकली जैपर चालसू परी ?

भवरो — तो काई आनै सागै ले चालू ? इत्ती दूर आ री चालण री सरधा है ? मादा नी होवता तो काई म्हैं आ नै अठै छोडतो ? तू भी मा कणै–कणैई इस्यी बाता करबा लाग जावै कै सुणता ही जी खाटो हुवै।

गीता — मादी म्हैं किस्यी कोनी। हरदम तो आख्या अगाडी अधारी आवती रैवै। दो पावडा चालू तो सास फूलै।

फूसाराम — जणै लाडी आ नै ले जाणो भी बेकार है।

भवरो — मा री बात और है काका। बी पी है। जातै ही चैकअप करा देसू। पण जी सा री मादगी तो बिलकुल न्यारी हे। आरै घावो नै तो देखता ही मिचळकी आवै। भलो–चगो भी जे आरै कनै उठे–बैठै तो बो भी आरी बीमारी री चपेट मे आया बिना नी रैवे।

फूसाराम — साची कैवै तू। भाईसा रो ओ रोग ही इस्यो है'कै आरै कनै बैठबा नै भी कोई त्यार नीं हुवै।

भवरा — जणै हीज तो।

भीमजी — (बात नै फोरता) सुरसती री मा बेटो लेवण नै आयो है तो जावण मैं काई आट है ?

भवरो — जठै नूवो दूढो बणायो बठै अवार आखती–पाखती में कोई नीं रैवै। दिन में म्हैं बैंक चल्यो जाऊ अर बा थारी बऊ इसकूल जावै परी। लारै टाबरा नै कुण सभाळै ? नोकराणी कोई भरोसै री मिळै कोनी कै जिकै रै ताण वानै छोड जावा।

भीमजी — भवरो ठीक कैवै। तैं सू बत्ती भरोसै री और कुण हो सकै ? म्हारी समझ मे तो अेडै आडै बगत तनै बठै जरूर जावणो चइजै।

गीता — तो काई म्हैं थानै छोड'र चली जाऊ ? अर बा भी ई हालत मे?

भीमजी — काई हरज है ? म्हारी चिन्ता ना कर। जठे फूसाराम है बठै म्हानै कोई तकळीफ कोनी।

गीता — ना–ना म्हैं नीं जाऊ। म्हारो मन नीं मानै।
(कैवती कैवती गळगळी हो जावै)

फूसाराम — भाभीसा इया जी छोटो ना करो। (भीमजी कानी देख र) अर

भाईसा आनै जे जैपर भेजणो है तो थांनै भी काळजो मोटो राखणो चइजै।

भीमजी ।(कोई उथळो नीं देय र आख्या रै आडै हाथ दे लेवै)

भवरो जी'सा में आहीज तो मोटी कमी है कै छोटी–छोटी री वात पर अै आपरी कमजोरी दिखा देवै।

फूसाराम (वात नै दूजी कानी मोड़तो) काई आज ही पूठो जावणो है ?

भवरो देखो ! आयो तो बस मा नै लेवण खातर ही हूं।

फूसाराम बठै जे आरो मन नीं लाग्यो तो ?

भवरो तो पूठो पूगा देसू।

फूसाराम देख लाडी घणा दिन तो बठै आनै क्यू राखै ? क्यूकै तू जाणै है भाईसा नै आरै विना घड़ी क ही नीं आवडै।

भवरो काका ओ तो म्हैं भी जाणू। पण जठै तई कोई भरोसैमंद नोकराणी नीं मिळै बठै तई तो मा नै दोरो–सोरो रैवणो ही है। आगै री फेर आगै सोचसा (केय नै निपटण खारू माय कानी चल्यो जावै)

गीता की भी कैवो म्हारो मन जावण रो नीं करै।

भीमजी (जी करडो कर नै) अेकर हो आ। देख तो आ बगलो किस्यो'क वण्यो है। ई बहानै टाबरा सू भी मिळणो हो जासी।

गीता थे कैवो भला ही थानै छोड'र जावण रो जी करै ही कोनी।

भीमजी अरी म्हे किस्या कठैई भाजर जाया हा ? तू आसी जित्तै अठै ही थारी वाट जोवता मिळसा। तू अेकर बठै जा तो सरी।

गीता तो काई थे म्हनै अठै सू काढणी चावा ?

भीमजी गैली आ भी भला कोई वात हुई ? कुण सी तू म्हानै खारी लागै जिको म्हे तनै काढणै री सोचा ! अर फेर ई ऊमर मे ? जठै थारै विना म्हारी गाडी अेक इच भी आगै नीं खिसकै। ना–नाऽऽ !

गीता इण रो मतळब है थे म्हनै ऊपरलै मन सू भेजणो चावो।

भीमजी बस आहीज समझ लै।

फूसाराम भाभीसा थे तो इया करया महीनो–वीस दिन रैय'नै पूठा आ जाया।

गीता पूठो तो फेर ओ नडासी जद ही आईजसी।

फूसाराम थ जोर देय'नै कैसा ता ई नै नडाणै ही पडसी। नडासी क्यू नी?

भीमजी आ तो बेमतळब री चिन्ता करै। खैर तू फूसाराम नळ सू दो अेक घडा भरल्या। कूडी मे पाणी बिलकुल ही कानी।

फूसाराम अरे हा बाता–बाता मे पाणी ल्याणो तो जाबक ही भूलग्यो। (घडो उठा र झट बारै निकळ जावै)

भीमजी तो जणै जावण रो मतो कर लियो ?

गीता मतो तो थे धिंगाणै करा रैया हो। म्हारी तो जावण री जचै ही

कोनी। फेर म्हारो डील भी सावळ नीं रैवै।

भीमजी — आ तो म्हे भी जाणा हा। अबै जद छोरो लेवण नै ही आयग्यो तो मना करणो भी चोखो कोनी। ओ पतो है कै कीं नै ही न्याल को करैनीं ओ।कित्ता बरसा बाद तो आयो है अर बो भी आपरी गरज सू।

गीता — ममता रै ब्याव सू पैला म्हैं कित्ती मादी पडी ही। छ मईना माचै सू हेटै नीं उतर सकी। पण ओ कदै पूछण नै भी नीं आयो।

भीमजी — जदकै उण टैम म्हे ईं नै कई कागद न्हाख्या। ईं कदै उथळो ही नीं दियो।

गीता — पतो नीं लुगाई ईं रै माथै काईं टूणो कर्‌यो है'कै आपा रै वास्तै ओ अेकदम परायो सो बणग्यो।

भीमजी — फेर भी सोचा बेटो तो है। परायो खून तो कोनी। ओ आपरो फरज नीं निभावै तो ईं री मरजी। आपा ईं रै बरोबर क्यू होवा ?

गीता — साची कैवो। अबै जिकी बात गळै मडगी बीं नै अेकर जैपर जाय'नै उतारणी ही है।

भीमजी — बस वठै घणा दिन मत लगाये।

गीता — जाणा तो हा बैगी ही कोई न कोई नोकराणी मिळ जासी।

भीमजी — नीं मिळै तो भी तू तो पूठी आ जाये।

गीता — देखो सा। जाया ठाह पडसी।

भवरो — (माय सू आवतो) जी'सा रामनारायणजी रो बेटो सोमनारायण अजकाळै अठै ही है या कळकत्तै गयो परो ?

गीता — क्यू ? बो अठै ही है। कालै ही देख्यो हो।

भीमजी — बीं सू फेर काईं काम है ?

भवरो — म्हैं जठै छत न्हाखी है उण रै पाखती ही सोमनारायण रो अेक प्लोट है। अरसै सू खाली पडयो है। सोचू, कोई सोदो पट जावै तो आगै टाबरा रै काम आसी।

भीमजी — चोखो'क। जणै मिळ आ। अताळ घरै ही होसी।

गीता — पण पैला चाय–बिजी तो पी जा।

भवरो — अै काम तो फैरू ही हो जासी। पैला बो मिळ जावै तो कोई बात तो टोरा। (कैय नै बारै कानी चल्यो जावै)

भीमजी — तू अबै जावण री त्यारी कर लै।

गीता — इती खतावळ क्यारी है ? अबार तो आयो ही है।

भीमजी — अर सिझ्या तईं ओ पाछो गाडी अपडणै री सोचसी।

गीता — नीं ओऽऽ।।

भीमजी — रग–ढग तो म्हानै ईं रा इस्या ही दीखै। ओ घणो अठै ०

कोनी।

गीता — पाछो आवण तो दो। म्हैं जितै चूलो तो सुळगाऊं। (उठ'र माय चली जावै)

(इणी रै सागै मच मायै अधारो घिरणो सरू हो जावै। थोडै अंतराळ रै बाद चानणो दुबारै होवण लागै)

भीमजी — (कुरसी पर बैठया कागद हाथ में लिया खुदोखुद) बीस–पच्चीस दिना बाद कोई कागद आयो तो सही। ओ भी सुरसती री मा भेज्योडो है। बाचा देखाण।

(कैय नै लिफाफै सू कागद निकाळ'र बाचै)

सुरसती रा जी सा ओ कागज लिख्या म्हनै पाच दिन होयग्या। भवरै नै डाक मे नाखण वास्तै दियो हो। आज अचाणक निजर पडी तो ओ वीं री मेज पर ही पड्यो हो। काईं करू ? पाछो उठा ल्यायी अर अबै नुवै सिरै सू दुबारै लिख रैयी हू। कालै दिनूगै टाबरा नै बस तईं छोडबा नै जासू, उण बगत डाक रै बबै म न्हाख देसू। ओ पतो नीं थानै ओ कद मिळसी।

म्हैं तो अठैं सू अेकदम नाकोनाक आयगी। आसै–पासै कोई बोल–बतळावण वाळो कोनी। बस्ती रै नाव पर अठै तीन–च्यार मकाना रै सिवाय और की नीं है। आ समझलो'कै कोरी खौड है। सूनवाड ही सूनवाड। दिन मे काक उडै अर रात मे उल्लू बोलै।

दिनूगै सात बज्या आ टाबरा नै छोडण खातर पूण कोस तईं उपाळी जाऊ जणै जाय नै सडक मिळै। टाबरा री बस बठै तईं ही आवै। जावतै बगत टाबरा तो सागै हुवै। आवती बेळा तो अेकली हीज आऊ। रस्तै मे कोई चिडी रो जायो ही नीं मिळै।

साची भवरै नै अेक नोकराणी री दरकार ही अर बा म्हैं मिळगी। इया अठै कोई भी नोकराणी इत्ती दूर नीं आवै। जद सू म्हैं आयी हू। आ नैचींतो है।

कालै म्हैं ई नै कैयो भी'कै अठै आया नै आज म्हनै बीस रोज होयग्या अबै तू म्हनै पूठी पूगा दै। पण ईं तो अेक कान सू सुण्यो अर दूजै सू निकाळ दियो। काईं जबाब ही नीं दियो। इण सू ओ लागै कै अबै म्हनै ओ वैगी सी पूठी भेजणी नीं चावै। अबै थे ही ईं नै कीं जोर देयर लिखदो तो भला ही नीं जणै ईं रै माथे तो चोपडै घडै छाट नीं है।

म्हैं तो अठै कोजी पजगी। म्हारो ओ कागज मिळता ही थे ईं नै अेक करडो कागज लिख्या। ईं मे ढील मती कर्‌या। ईं तो जाबक ही ढिठाई धार राखी है अर म्हनै अबै अठै अक दिन भी नीं रैवणो।

ईं री सारी बाता कडी है। अठै म्हैं ईं री मा कोनी बस अेक आया हू टाबरा नै सभाळण वाळी। ईं सू बत्ती अे म्हनै कीं मानै ही कोनी। ना म्हारै कनै उठै–बैठै। इयै रै ही माजणै री है ईं री बऊ। बल्कै बा च्यार चडा बेसी। सारी लाज–सरम ही माथै सू न्हाख राखी है। इस्यी–इस्यी बाता है कै म्हैं थानै काईं बताऊ ?

अबै तो म्हैं थारै कागद रै भरोसै ही बैठी हू। बैगै सू बैगो ईं नै कागद लिखो अर म्हनै ईं नरक सू निकाळो।

आपरै ही चरणा री दासी–गीता।

(कागद बाचर खुदोखुद) तू चिन्ता ना कर सुरसती री मा। म्हे अबार बीं नालायक ने कागद लिखा। बीं कोई मजाक समझ राखी है कै मा री बात भी नीं सुणै। थारै पूगण रो जद कागज नीं आयो जणै ही म्हे समझग्या कै बीं धोखो करयो है। खैर अबै बीं नै कीं सागीडी सुनावणी पडसी। बो म्हारो कागद बाचता ही तनै अठै नीं पूगावै तो म्हानै कैये। नीं जणै म्हे फूसाराम नै सागै लेयर बठै आया रैसा। या रै कुळखणा छेकड तैं थारी मा नै रोवार छोडी। हरामजादा म्हे तनै कदै माफ नीं करा।

(इणी रै सागै मच फेरू अधारै में घिर जावै। जरा सो अतराळ पड़ै कै भीमजी लाठी रै सायरै बारै सू आवता दीखै नै उजाळो फैलतो जावै।)

भीमजी — फूसाराम।

फूसाराम — (माय कानी सू) आयो भाईसा।

भीमजी — जैपर सू आज भी कोई कागद नीं आयो।

फूसाराम — डाकखानै जाई आया काईं ?

भीमजी — हा। अबार बठै सू ही आ रैया हा।

फूसाराम — आ तो बेजा बात है। भवरै नै कम सू कम कागद तो न्हाखणो चइजै।

भीमजी — (तखत पर बैठता) बो तो काईं कागद न्हाखसी। अडीक तो बीं री मा री चिट्ठी री है। बीं री तरफ सू इत्ती ढील तो नीं होणी चइजै फेर पतो नीं।

फूसाराम — आ तो चिन्ता री बात है।

भीमजी — दो दिना सू बळी आ डावी आख न्यारी फुरक रैयी है।

फूसाराम — दो–च्यार रोज और बाट देख लेवा नीं जणै दोनू जैपर चालसा परा।

भीमजी — फेर तो ओहीज करणो पडसी। जित्तै तू गुसाईंसर हो आ।

फूसाराम — बठै मन तो जावण रो नीं है। पण बैन्दोईजी कैवैला कै भाणजी री

सगाई माथै ही नीं आयो।

भीमजी — बै तो कैसी अर वारो कैवणो कूड भी कोनी। भाणजी री सगाई अर मामो नीं जावै इण सू बेसी माडी बात और काईं होसी ?

फूसाराम — जणै ही सोचू हो आऊ। अबार घडी अेक नै निकळ जाऊ ता दिन ढळणै सू पैला-पैला पूग जासू।

भीमजी — मजै सू पूग जासी। ओ रैयो तीन कोस माथै गुसाईंसर।

फूसाराम — काले सगाई रो दस्तूर है। जाणा दुपारै तई सळट जासा।

भीमजी — जणै कालै सिझ्या तईं तो पाछो आ जासी।

फूसाराम — और नीं तो।

भीमजी — बठै तईं दूधोजी म्हारै कनै रैय लेसी।

फूसाराम — इण वास्तै बानै अगूच ही कैवा दियो।

भीमजी — चाखो क। कैवा दियो जणै बै आया रैसी।

फूसाराम — परसै री बऊ नै कैयोडो है थाळी बा थानै अठै पूगा जासी।

भीमजी — क्यू ? नीं कैंवतो तो बा पूगावती कोनी ?

फूसाराम — क्यू नीं ! अेडी काईं बात है ?

भीमजी — अरे बावळा तू जित्तो ध्यान राखै बीं सू बत्तो थारा बेटा-बऊ राखै। म्हानै इया लागै ही कोनी'कै म्हे अेकला हा। छोरो परसो तो थारो म्हानै बाबोसा-बाबोसा कैंवतो थकै ही कोनी।

फूसाराम — तो थे किस्या पराया हो ? अेक मा रै पेट सू जळम नीं लियो तो काईं हुयो हा तो भाई-भाई। थे बडा नै म्हैं छोटो।

भीमजी — थारी ईं अपणायत रै साम्हैं म्हारा आपरा तो की नीं है। आज सुरसती री मा नै जैपर गया ढाई मईना होवण लागा है। था लोगा रा साथ नीं हावतो तो म्हे अठै इत्ता दिन टिकता काईं ?

फूसाराम — जिका आपणा हुवै या रो साथ तो देणो ही पडै।

भीमजी — आ मत कैय। अे तो लारलै भौ रा सम्बन्ध है। भवरै नै देख बो किस्यो परायो है ? पण बीं रै कनै अपणायत जिस्यी कोई चीज कोनी। बीं तो मा रो भी कदे भलो नीं कर्‌यो।

फूसाराम — साची भाईसा बींरा तो सारा पोत चवडै आ रैया है। म्हनै बीं रो रुख दाय नीं आयो। भला आ भी कोई बात हुयी जावण रै बाद कोई समाचार ही नीं।

भीमजी — म्हारो मन कैवै सुरसती री मा रो सरीर ठीक कोनी। बठै रौ हवा-पानी बींनै सदी कोनी अर बा बीमार पडगी।

फूसाराम — इस्यी तो क्यू सोचो ? परमात्मा करै बा नै कीं नीं हुवै। पण भवरै नै तो भाईसा इया तो कोनी कै बीं बठै सू कागद न्हाख्यो हुवै अर अठै आपा कनै नीं पूग्यो हुवै।

भीमजी	तू भी किस्यी गैली बाता करै। कागद न्हाखै तो जावै कठै ? सही ठिकाणो लिख्यो हुवै तो वो सही ठौड पूगै ही।
फूसाराम	फेर तो ...... काईं बात हो सके ?
भीमजी	बात अबै कीं नीं तू गुसाईंसर रो काम निपटा आ फेर जैपर चालणो है। इया अडीक्या को सरै नीं। नीं जणै म्हारी हालत गतापम हा जासी।
फूसाराम	क्यू हो जासी ? थे कैवो तो आज ही जैपर चाला परा। गुसाईंसर जाणो टाळयोसरी।
भीमजी	ना–ना।
फूसाराम	तो फेर धीरज राखो।
भीमजी	धीरज तो घणो ही राखा फूसाराम पण काईं करा ? सुरसती री मा हरदम आख्या आडी आती रैवै। रात मे तो कणै–कणै इया लागै जाणै बा म्हानै कठै सू हेलो मार रैयी है।
फूसाराम	ॳै तो मन रा बहम है भाईसा।
भीमजी	बैम समझ चावै और कीं म्हारी तो नींद ही उडगी।
फूसाराम	घणो सोच्या मती करो।
भीमजी	सोचणो–नीं सोचणो आ कोई बस री बात कोनी। अबै तैं सू काईं छुपावा। बीती रात घडी अेक नींद आई हुवैली कै सुपनै मे थारी भाभी दिखी। साम्हैं कुरसी पर बैठ कैबा लागी म्हारै बारै मे अबै थे सोचणो बद कर दो। क्यू भेजो खराब करो। म्हनै अेकदम भूल जाओ। म्हैं बोल्या -- गैली तनै भूल्या कींकर सरै ? तू ही म्हारी जिदगी है। तू है तो म्हे हा। साची फूसाराम ईं सू आगै म्हा सू बोल्यो ही नीं गयो। जाणै कठ मुसीजग्या हुवै। सुपनै मैं ही भू–भू रोवण लागा कै अेकाअेक आख खुलगी। फेर ध्यान आयो ओ तो कोई सुपनो हो। पण हिचक्या मरी निरी ताळ तई नीं थमीं। (कैवता कैवता गळगळा होयग्या)
फूसाराम	इया काईं करो भाईसा ? सुपनो कदै साचो हुवै ? थे तो टाबरा दई यात्या करणै लागग्या।
भीमजी	(आख्या पूछता) ना–ना इया ही थारी भाभी री थोडी याद आयगी।
फूसाराम	याद तो आवै ही। बा नै ग्या भी तो निरा दिन होयग्या।
भीमजी	अबै तो भाईडा बीं रै बिना अेक–अेक दिन काटणो ओख्यो होयग्यो।
फूसाराम	इयै ऊमर मे ही तो घरवाळी रो मोल जाणीजै।
	(इणी बगत बारै सू हाथ मे बैग झाल्या ममता आ जावै)
भीमजी	(अेकटक होय नै देखता) कुण ममता बेटी !

ममता (आख्या मैं उफणतो समदर छिपाय नै) हा म्हैं हीज हू। पगै लागू नानाजी। (कैवतीं भीमजी रा पग छूवै)

भीमजी जींवती रैय। परणीजण रै बाद आज पैली दफै आई है। कुवरसा कठै है?

ममता बानै तो कोई जरूरी काम सू पूठो जावणो पडग्यो।

फूसाराम अठै आय नै पूठा गया परा ?

ममता अठै तो आया ही कठै।

भीमजी भले ! तो काईं बींच माय सू ही चाल्या गया ?

ममता नी तो। जैपर तईं तो सागै ही हा। वठै सू ही बै पाधरा राजगढ गया परा। म्हैं अठीनै आयगी।

फूसाराम अेकली ?

ममता क्यू, गाडी मे काईं अेकली नीं आवणो चइजै ?

फूसाराम नीं तो भलै ही आओ।

भीमजी तो जणै नानी सू मिळ आई ?

ममता । (उथळो नीं दे सकी अर आख्या भरीजगी)

फूसाराम तनै बाई आ कींकर ठा पडी के नानीजी जैपर गयोडा है।

ममता मामाजी रो कारड आयो हो।

भीमजी देख लियो फूसाराम भवरै नै ईं रै अठै कारड न्हाखण री फुरसत मिळगी पण ।

ममता तो काईं अठै मामाजी रो कारड नीं आया ?

भीमजी कठै ! पूरा ढाई मईना होयग्या बींरै कानी सू कोई चिट्ठी है न कोई पतरी।

फूसाराम जद सू भाभीसा नै लेय'र गयो है।

भीमजी बिचाळै सी क थारी नानी रै हाथ रो लिख्यो अेक कागद जरूर आयो पण थारै मामै । (माथौ पीट लेवै)

फूसाराम भाईसा तो रोज अेक चक्कर डाकखानै रो लगार आवै।

भीमजी काईं करा बेटी ? थारी नानी रै बिना ।

(ममता चीख मारती रोवण लाग जावै)

भीमजी काईं बात है बेटी ? तू अेकाअेक इया रोवण नै क्यू लागगी ? म्हानै साची–साची बता नानी तो थारी राजी खुसी है ?

ममता (रोवती रोंवती भीमजी री छाती सू लागर) ना–ना । नानाजी अबै म्हैं काईं बताऊ। नानीजी अब ईं दुनिया मे नीं रैया।

भीमजी काइऽ ऽ ! !

ममता हा नानाजी बै म्हा सगळा नै छोडग्या।

भीमजी (आकळ बाकळ होंवता) ना–ना आ नीं हो सकै .. बा म्हानै

	इया दगो देय'र नीं जा सकै ... कैय दै बेटी आ बात कूडी है।
फूसाराम	भाईसा हिम्मत राखो। भाभीसा री ।
भीमजी	...... पण इया किया हुवै। म्हे तो वीं री बाट जो रैया हा अर बा बोली–चोली परवारै ही गई परी।
ममता	(रोंवती रोंवती) ना ना जी ।
भीमजी	जावती म्हानै कैयगी ही म्हैं वेगी ही पूठी आ जासू।
ममता	अबै बै नीं आवै।
भीमजी	इण रो मतलब है जरूर वीं नै कोई राकस लारै सू आय'नै धक्को देयग्यो।
ममता	राकस ! हा नानाजी थे ठीक कैयो बै राकस ही हा। दुपारै री टैम नानीजी घर में जद अेकला हा तो दो–तीन राकस चोरी री नीयत सू घर में घुस आया। नानीजी बा सू की पूछता इण सू पैला ही बा वारो गळो मोस काढयो।
भीमजी	(थोड़ा अधगायळा सा होंवता) जणै तो जायोडै रै घर री रूखयाळी करणै री जायी नै बगसीस मिळगी।
फूसाराम	अबै कीं भी समझो। भाभीसा री आहीज भावी ही।
भीमजी	(कीं ऊडी सोचता सोचता) अेक बात है। म्हानै लागै बींनै कोई कारण सू अेकाअेक री जावणो पडग्यो। इणी कारण तो बा म्हानै कैयावणो भूलगी। नीं जणै म्हा दोना नै तो सागै ही जावणो हो। क्यू फूसाराम साची बताये म्हे वीं नै कैयो कोनी'कै तू पूठी आसी जित्तै म्है थारी अठै ही वाट जोवाला। म्हारी जाण में कठैई मोड माथै जरूर बा अेकली बैठी है आ सोच'र कै जद म्हानै ठाह पडसी तो म्हे लारै सू आपैई पूग जासा। क्यू फूसाराम ? आहीज बात है। म्हारै बिना बा अेकली आगै खिसक ही नीं सकै। अेकली कठै जावती जद नीं। (उठता) लै रे जीवडा अबै बेरो लागग्यो तो बैठया नीं सरै। सुरसती री मा रो सागो तो करणो ही पडसी। बीं भी तो हमेसा म्हारो साथ निभायो।
फूसाराम	चेतो करो भाईसा चेतो करो। (हाथ देय'र सभाळै)
ममता	अै तो उखड़ी–उखडी बाता करबा लागग्या।
फूसाराम	लागै है भाभीसा री अकाळ मोत रो ब्होत सदमो पूग्यो है आ नै।
भीमजी	(आपरी ही धुन में) सुरसती री मा थोडो ठैरये।
	(आगे बधता) म्हे आ रैया हा। म्हे आ रैया हा।

(कैंवता कैंवता री चेतना जवाब देवण लागै'कै फूसाराम झट झाल लेवै। इणी बीच अेक जोर रो झटको काळजै पर इस्यो लागै कै भीमजी री नसडी फूसाराम रै हाथ में ही गुडक

जावै। ममता तो देखतै ही फूट फूट र रोवण लागै कै फूसाराम री आख्या रो बाध भी फूट पडै। इणी रै सागै सगळा जणा फ्रीज सा हुवै कै मच पर उजाळो होळै होळै मधरो पडतो जावै।)

❑

वरिष्ठ नाट्य लिखारा श्री निर्मोही व्यास रगमच पर घणा ही प्रयोग करया है। माटी री सौरभ अर आपणी धरा री आ खास विसेसता है कै अठै रो जायो–जळम्यो हर जगै अठै री ओळखाण बणायै राखै। व्यासजी रो ओ मानणो रैयो'कै राजस्थानी भाषा दूजी भाषावा सू ब्होत सातरी है। इण रै पेटै आप आपरै इण ताजै नाटक अेक गाव री गोमती मे सस्कृति री सही झलक दिखाई है। व्यासजी री इण बात रो म्है समर्थक हू कै गीत–सगीत री वैशाखिया रै सागै हर नाटक री रचना ओपती नीं लागै। इण सू गभीर नाटका री गभीरता नै चोट पूगै।

इण नाटक मे सीधी अर सपाट भाषा मे गाव री जूनी मान्यतावा पर कई सवाल उठाया गया है। लुगाई जात नै हक दिरायो है तो राजनीति रै माय पनपण वाळी भिरस्टाचारी बाता पर सू भी परदो परै न्हाखीज्यो है। म्हारी समझ में व्यासजी रो ओ नाटक रगमच नै नुवा आयाम देवैला।

जगमोहन सक्सेना
(राजस्थानी रै पेटै रूस जावणिया अेकमात्र लिखारा)